04 - तमिलनाडु - अब क्या करेंगे अन्नामलै?

05 - भारतीय कला, टैगोर परिवार एवं जोरासाँको

06 - डबरा में 50 लाख की लूट का खुलासा

07 - वेब सीरीज में सिनेमा, टीवी से कहीं ज्यादा दम

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 07 जून, 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 245, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

उड़ान ... राजसमंदर झील

फोटो: पंकज शर्मा

सुप्रभात

हर बरस
पर्यावरण की खातिर
लगाएँ जाते हैं
असंख्य पौधे

वृक्षारोपण के नाम पर
रोपें गये इन हरेङ्कभरे पौधों संग
मिट्टीङ्कपानी डालते
फोटो और वीडियो
आभासी पटल पर
कर दिये जाते हैं चस्पा
और हो जाती है
इतिश्री !

पौधे रोपने के बाद
जब नहीं ली जाती है
इनकी कोई सुध
बिना देखभाल
खाद-पानी के
इनमें से अधिकांश पौधें
तड़प तड़प कर
कुछ ही दिनों में
हो जाते हैं निष्प्राण

इन असंख्य पौधों की
असमय मौत से
भविष्य के कई पेड़
और उनसे जुड़ने वाली
सभी प्राकृतिक संभावनाएँ
हमेशा हमेशा के लिए
हो जाती है दफन
ठीक उन्हीं गड्ढों में
जिसमें रोपें गये थे वे।

वृक्षारोपण की आड़ में
हर बरस होती रहती है
असंख्य पौधों की खरीदफरोख्त
खोदे जाते हैं गड्ढे दर गड्ढे
कहीं कहीं तो
बिना गड्ढे खोदे
सिर्फ फाईलों में ही
रोप दिये जाते हैं लाखों पौधे
कागजों में फलता-फूलता रहता है
लाखोंङ्करोड़ों का
हराभरा कारोबार।

अंत में
पौधे जीवित रहते हैं सिर्फ
उन्हें रोपने वालों के
आभासी पटल पर।

– संजय सिंह राठौर

मानसून ने पकड़ी रफ्तार

गोवा में दी दस्तक

● केरलम-कर्नाटक और तमिलनाडु में भारी बारिश का रेड अलर्ट

एमपी-छत्तीसगढ़ में देर से पहुंचने का जताया जा रहा है अनुमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। 3 दिन की देरी से आने के बाद मानसून ने रफ्तार पकड़ ली है। केरलम, कर्नाटक, तमिलनाडु को पार कर मानसून गोवा पहुंच गया है। मुंबई में भी इसके जल्द पहुंचने की संभावना है। फिलहाल पणजी, बेंगलुरु, सलेम, पंबन में मानसून के कारण तेज बारिश हो रही है।

वहीं, केरलम में आज बारिश का रेड अलर्ट है। रेड अलर्ट का मतलब है यहां अगले 24 घंटे में 20एमएम से बहुत ज्यादा बारिश हो सकती है। वायनाड-कासरगोड में स्कूल बंद रहेंगे। टूरिस्ट ट्रेकिंग स्पॉट पर जाने, पहाड़ी रास्तों पर रात में ट्रैवलिंग और पत्थर निकालने के काम पर रोक लगा दी गई है। आईएमडी के मुताबिक 3 दिन में मानसून असम, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा, मणिपुर, नगालैंड, अरुणाचल और बंगाल के कुछ हिस्सों तक पहुंच सकता है। 10 दिन में यह बिहार, झारखंड और ओडिशा में आ सकता है। हालांकि, बाद में मानसून अटक सकता है। स्काईमेट वेदर के एक्सपर्ट जीपी शर्मा के मुताबिक एमपी, छत्तीसगढ़, ओडिशा, बंगाल में मानसून को आगे बढ़ाने के लिए बंगाल की खाड़ी में एक मजबूत सिस्टम की जरूरत होती है, जो फिलहाल मौजूद नहीं है।

ऐसे में इन राज्यों में मानसून की रफ्तार धीमी पड़ सकती है। गुजरात को छोड़कर बाकी सभी राज्यों में प्री-मानसून ऐक्टिव है। राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर में भी भारी बारिश हो रही है। इन राज्यों में आज के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। राजस्थान में प्री-मानसून की शुरुआत अच्छी रही। आंधी-बारिश के कारण तापमान 5 डिग्री तक गिरा है।

शहरों का तापमान लुढ़का, आंधी की आशंका

प्रदेश में आंधी-बारिश के चलते पारा लुढ़क गया है। शुक्रवार को ज्यादातर शहरों का तापमान 40 डिग्री से नीचे रहा। मौसम विभाग ने रात में कई जिलों में तेज आंधी और बारिश का अलर्ट जारी किया है। यहां 40किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से हवा चल सकती है। प्रदेश में मानसून की एंट्री 20 से 22 जून के बीच हो सकती है प्रदेश के 43 जिलों में हल्की बारिश का अलर्ट है। 21 जिलों में आंधी-तूफान आ सकता है। मौसम विभाग का कहना है कि 24 घंटे में पश्चिमी विक्षोभ का असर खत्म होगा। इसके कारण पिछले 12 दिन से चले रहे आंधी-बारिश के सिलसिले पर ब्रेक लगेगा। 9 जून से एक बार फिर गर्मी बढ़ने लगेगी।

निवेशकों के साथ बैठक

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर में भारत-लैटिन अमेरिका एवं कैरेबियन (एलएसी) व्यापार एवं निवेश फोरम-2026 का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया और सहभागी निवेशकों के साथ बैठक की।

पश्चिम एशिया संकट के बीच ऐक्शन में पीएम मोदी

● पीएम ने आर्थिक सलाहकार परिषद के साथ की बैठक

ईज ऑफ डूइंग बिजनेस सुधारों पर मोदी का रहा जोर

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को पीएम-इकोनॉमिक एडवायजरी काउंसिल के सदस्यों के साथ बैठक की। इस बैठक में पीएम मोदी और इकोनॉमिक एडवायजरी काउंसिल के सदस्यों ने ग्लोबल उथल-पुथल के समय भारती की इकोनॉमिक ग्रोथ को और बढ़ाने के लिए कई आइडिया और उपायों पर चर्चा की। ईज ऑफ लिविंग और ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में सुधार के लिए कई बदलावों पर भी चर्चा हुई।

सदस्यों ने वेस्ट एशिया में चल रहे टकराव का भारत और दुनिया पर पड़ने वाले असर के बारे में भी अपनी राय दी। यह बैठक ऐसे समय में हुई है जब दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाएं जियोपॉलिटिकल तनाव, व्यापार से जुड़ी अनिश्चितताओं और असमान ग्रोथ ट्रेंड से जूझ रही है। पिछले महीने, पीएम मोदी ने नागरिकों से अपील की थी कि वे वेस्ट एशिया टकराव के बीच इम्पोर्टेड फ्यूल पर निर्भरता कम करके और पर्यावरण के अनुकूल विकल्प अपनाकर इकोनॉमिक मजबूती में योगदान दें। पीएम मोदी ने नागरिकों से वर्क फ्रॉम होम को प्राथमिकता देने, फ्यूल की खपत कम करने, एक साल तक विदेश यात्रा से बचने, स्वदेशी प्रोडक्ट्स अपनाने, खाना पकाने के तेल का इस्तेमाल कम करने, नेचुरल फार्मिंग की ओर बढ़ने और सोना खरीदने में कमी लाने का आग्रह किया। फ्यूल की कीमतों में उतार-चढ़ाव से निपटने के लिए, पीएम मोदी ने भारत में आवागमन के तरीकों में बदलाव का आग्रह किया।

मुख्यमंत्री के निवेश प्रयासों को मिली बड़ी सफलता

हेलियन की पहली भारतीय मैन्युफैक्चरिंग इकाई का पीथमपुर में 8 जून को होगा भूमि-पूजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा मध्यप्रदेश को वैश्विक निवेश का पसंदीदा गंतव्य बनाने के लिए किए जा रहे सतत प्रयासों का एक और महत्वपूर्ण परिणाम सामने आया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में आयोजित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय निवेश संपर्क अभियानों, क्षेत्रीय उद्योग सम्मेलनों तथा विदेश निवेश संवादों के माध्यम से प्रदेश में निवेशकों का विश्वास लगातार मजबूत हुआ है। इसी क्रम में विश्व की अग्रणी कंज्यूमर हेल्थकेयर कंपनी हेलियन द्वारा प्रदेश के पीथमपुर स्थित स्मार्ट इंडस्ट्रियल पार्क में स्थापित की जाने वाली भारत की पहली मैन्युफैक्चरिंग इकाई का भूमि-पूजन 8 जून को मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा किया जाएगा।

यह परियोजना मुख्यमंत्री डॉ. यादव के यूनाइटेड किंगडम प्रवास और वहां आयोजित निवेश संवादों से सार्थक हुई है। निवेशकों के साथ हुई विस्तृत चर्चाओं और मध्यप्रदेश की औद्योगिक क्षमताओं के प्रभावी प्रस्तुतीकरण के बाद हेलियन ने प्रदेश में अपना निवेश विस्तार करने का निर्णय लिया। अब यह निवेश प्रस्ताव क्रियान्वयन के चरण में पहुंच चुका है, जो प्रदेश में निवेश परियोजनाओं को तेजी से धरातल पर उतारने की राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है।

लगभग दो हजार करोड़ रुपए की लागत से स्थापित होने वाली यह परियोजना प्रदेश में साकार हो रही महत्वपूर्ण विदेशी निवेश परियोजनाओं में शामिल है। पीथमपुर के स्मार्ट इंडस्ट्रियल पार्क में 40 एकड़ से अधिक क्षेत्र में विकसित की जाने वाली यह अत्याधुनिक इकाई मुख्य रूप से ओरल हेल्थ उत्पादों के निर्माण पर केंद्रित होगी। यहां उत्पादित सामग्री घरेलू बाजार की आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ एशिया-प्रशांत, मध्य-पूर्व और अफ्रीका क्षेत्र के अनेक देशों में निर्यात भी की जाएगी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 07 जून 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

तमिलनाडु में 10 घंटे में जुड़ गए 10 लाख लोग

● बीजेपी छोड़ते ही अन्नामलाई को मिला जबरदस्त समर्थन

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु में बीजेपी के पूर्व अध्यक्ष अन्नामलाई ने पार्टी छोड़ने के बाद नया राजनीतिक आंदोलन शुरू कर दिया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक उनके इस आंदोलन को खूब समर्थन मिल रहा है। 10 घंटे के अंदर ही कम से कम 10 लाख लोगों ने उनके समर्थन में हस्ताक्षर किए हैं।

● **आंदोलन से पार्टी की ओर बढ़ाए कदम-** पार्टी से इस्तीफा देने के बाद अन्नामलाई ने कहा कि यह आंदोलन एक राजनीतिक दल का रूप लेगा और आगामी विधानसभा चुनाव लड़ेगा। एक डिजिटल प्लेटफॉर्म वेथेलीडरडॉटओआरजी लॉन्च करने के बाद कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये समर्थकों को संबोधित करते हुए उन्होंने इस पहल से जुड़ने और योगदान देने के लिए स्वयंसेवकों को आमंत्रित किया।

बता दें कि अन्नामलाई ने शुक्रवार को ही बीजेपी को ही बीजेपी से इस्तीफा देने के बाद अपना नया अभियान शुरू किया था। अन्नामलाई ने सोशल मीडिया पर लिखा, हमारे राजनीतिक आंदोलन को बड़ा समर्थन मिलरहा है और 10 घंटे में ही कम से कम 10 लाख लोगों ने रजिस्ट्रेशन करवाया है। इससे साबित होता है कि लोग हमारे इस अभियान और दृष्टिकोम से इत्तेफाक रखते हैं।

भारत कभी किसी देश के दबाव के आगे नहीं झुका

● राष्ट्रपति पुतिन का ट्रंप को संदेश, चीन की भी तारीफ

मास्को (एजेंसी)। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इन दिनों लगातार भारत की स्वतंत्र विदेश नीति की सराहना कर रहे हैं। अमेरिकी दबाव के बीच डोनाल्ड ट्रंप को सीधा और कड़ा संदेश देते हुए पुतिन ने लगातार दूसरे दिन कहा है कि भारत ने अपने इतिहास में कभी भी किसी विदेशी ताकत के हुक्म या दबाव को स्वीकार नहीं किया है। रूसी राष्ट्रपति ने यह बात सेंट पीटर्सबर्ग इंटरनेशनल इकोनॉमिक फोरम के एक मुख्य सत्र में कही है। पुतिन ने जोर देकर कहा कि किसी भी देश की संप्रभुता और उसके स्वतंत्र फैसले लेने के अधिकार को कभी चुनौती नहीं दी जा सकती। इंडिया टुडे की एक रिपोर्ट के मुताबिक राष्ट्रपति पुतिन ने भारत और चीन की जमकर तारीफ की है।

● **तेल खरीद और अमेरिकी टैरिफ का विवाद-** भारत हमेशा से अपनी स्वतंत्र विदेश नीति पर गर्व करता रहा है। गौरतलब है कि पिछले साल रूस से कच्चे तेल की खरीद को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर भारी दबाव बनाया था। अमेरिका का दावा था कि तेल से मिलने वाले राजस्व का इस्तेमाल मॉस्को यूक्रेन के खिलाफ युद्ध में कर रहा है। इस विवाद के चलते अमेरिका ने दंडात्मक कार्रवाई करते हुए भारत पर आयात शुल्क को दोगुना कर 50 फीसदी कर दिया था, हालांकि इस साल इसे घटाकर 18 फीसदी कर दिया गया है।

मध्यप्रदेश में 10 साल में 33 लाख से ज्यादा बच्चों ने छोड़ा प्राइमरी स्कूल

109 प्रतिशत से घटकर सीधे 76प्रतिशत पर आया आंकड़ा

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा को लेकर एक बेहद चिंताजनक रिपोर्ट सामने आई है। नीति आयोग द्वारा जारी वर्ष 2024-25 के ग्रॉस एनरोलमेंट रेशियो (जीईआर) के ताजा आंकड़ों के मुताबिक, मध्य प्रदेश पिछले एक दशक में प्राथमिक स्कूली बच्चों के दाखिले के मामले में देश के सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले राज्यों की सूची में शामिल हो गया है।

30 फीसदी गिरा आंकड़ा- आंकड़े बताते हैं कि एक दशक पहले मध्य प्रदेश का प्राइमरी स्कूल एनरोलमेंट रेशियो करीब 109.3 प्रतिशत हुआ करता था, जो अब लगभग 30 फीसदी गिरकर महज 76.3 प्रतिशत पर सिमट गया है। देश के किसी भी बड़े राज्य में यह गिरावट सबसे बड़ी और चौंकाने वाली है। इस मामले में मध्य प्रदेश की स्थिति केवल बिहार (77.2प्रतिशत), गुजरात (79.6प्रतिशत), उत्तर प्रदेश (83.1प्रतिशत) और राजस्थान (88.3प्रतिशत) जैसे राज्यों के समकक्ष या उनसे भी बदतर हो चुकी है।

मेघालय ने बनाया इतिहास- इसके विपरीत, देश के छोटे राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने इस मोर्चे पर बेहतरीन प्रदर्शन किया है। पूर्वोत्तर का मेघालय 180.7 प्रतिशत के साथ देश में सबसे आगे है, जबकि मणिपुर, मिजोरम, गोवा और तेलंगाना जैसे राज्यों में नामांकन दर 100 प्रतिशत से भी ऊपर है, जो दिखाता है कि वहां तय उम्र से ज्यादा के बच्चे भी स्कूलों का रुख कर रहे हैं।

लाखों बच्चों ने छोड़ी पढ़ाई

शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि मध्य प्रदेश जैसे बड़ी आबादी वाले राज्य में इस स्तर की गिरावट का मतलब है कि लाखों बच्चे औपचारिक प्राथमिक शिक्षा प्रणाली से बाहर हो चुके हैं। इसके पीछे स्कूलों तक पहुंच की कमी, बीच में पढ़ाई छोड़ना, परिवारों का पलायन या फिर डेटा एंट्री में लापरवाही जैसे गंभीर कारण हो सकते हैं।

महासचिव (एमपी पेरेंट्स एसोसिएशन) ने कहा मध्य प्रदेश देश के सबसे अधिक आबादी वाले राज्यों में से एक है, इसलिए यहां प्रतिशत में मामूली बदलाव का असर भी लाखों बच्चों पर पड़ता है। इस भारी गिरावट के असली कारणों की पहचान करना बेहद जरूरी है। अगर बच्चे सच में स्कूल छोड़ रहे हैं, तो हमें मिड-डे मील को मजबूत करने, मुफ्त परिवहन, इंफ्रास्ट्रक्चर और कैश ट्रांसफर जैसी योजनाओं पर तुरंत काम करना होगा।

दिल्ली में कॉकरोच जनता पार्टी का 5 घंटे प्रदर्शन

● अभिजीत बोले-शिक्षा मंत्री इस्तीफा दें, नहीं तो फिर प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट पेपर लीक शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर कॉकरोच जनता पार्टी, यानी सीजेपी ने शनिवार को दिल्ली के जंतर-मंतर पर 5 घंटे प्रदर्शन किया। पार्टी के फाउंडर अभिजीत दीपके ने कहा कि मंत्री शाम 5 बजे तक इस्तीफा दें, नहीं तो पूरे देश में प्रदर्शन किया जाएगा। अगले शनिवार, यानी 13 जून को जंतर-मंतर पर फिर प्रदर्शन करेंगे। सीजेपी को जंतर मंतर पर

आज शाम 5 बजे तक प्रदर्शन करने की अनुमति मिली थी, लेकिन करीब 3 बजे ही अभिजीत और सोनम वांगचुक धरनास्थल से रवाना हो गए थे। इसके बाद प्रदर्शन खत्म हो गया। अभिजीत सुबह ही अमेरिका से दिल्ली लौटे थे। वे एयरपोर्ट से सीधे जंतर-मंतर पहुंचे थे।

युद्ध संकट के बावजूद यूपी का एक्सपोर्ट रहा 'बम-बम'

● पहली बार 2 लाख करोड़ रुपये के पार, लैंडलॉक राज्यों में अव्वल

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के उत्पादों का निर्यात बढ़ता जा रहा है। दुनिया भर में मंदी के बादल और युद्ध के बावजूद उत्तर प्रदेश का निर्यात पहली बार 2 लाख करोड़ रुपये के पार पहुंच गया है। उत्तर प्रदेश में नोएडा से सबसे अधिक निर्यात हुआ है। देश में निर्यात के मामले में यूपी 5 वें स्थान पर पहुंच गया है। निर्यात के मामले में उत्तर प्रदेश लैंडलॉक राज्यों में सबसे आगे है। लैंडलॉक राज्य का मतलब वह राज्य है जिसकी सीमा किसी समुद्री क्षेत्र से नहीं सटी है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में यूपी से 2,01,241 करोड़ रुपये का निर्यात किया गया।

पहली बार 2 लाख करोड़ से अधिक का निर्यात- यह पहली है जब उत्तर प्रदेश का निर्यात 2 लाख करोड़ रुपये के पार पहुंच गया है। इसके साथ यूपी देश के 5 बड़े निर्यातक राज्यों की श्रेणी में शामिल हो गया है।

नर्मदापुरम-सीहोर में आंधी-बारिश, 21 जिलों में अलर्ट

7 जिलों में ऑरेंज अलर्ट, 3 साइक्लोनिक सर्कुलेशन एक्टिव

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में मानसून से पहले प्री-मानसून जमकर बरस रहा है। भोपाल, इंदौर समेत करीब 21 जिलों में आंधी-बारिश का अलर्ट जारी किया है। नर्मदापुरम में आंधी के साथ बारिश हो रही है। वहीं सीहोर में भी दोपहर से जमकर पानी बरस रहा है। मौसम केंद्र ने 40-50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से आंधी की चेतावनी जारी की है।

मौसम विभाग के मुताबिक, सतना, मैहर, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, कटनी, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर, नरसिंहपुर, इंदौर, देवास, सीहोर, नर्मदापुरम, शाजापुर, जबलपुर, मंडला, डिंडौरी, सिवनी और बालाघाट में आंधी के साथ बारिश हो सकती है।

सागर और खंडवा में 41, बैतूल में 39, भोपाल में 37, विदिशा, नर्मदापुरम और अशोकनगर में 35, शिवपुरी और बड़वानी में 33, उज्जैन और नीमच में 30 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलीं। सतना में सबसे तेज 59 किलोमीटर प्रति घंटे की आंधी चली।

इसके अलावा सीहोर में 48, आगर-मालवा में 44, धार और गुना में 43 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलीं। बारिश के साथ लगभग 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से आंधी चलने की संभावना जताई गई है।मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया कि प्रदेश के ऊपर 3 साइक्लोनिक सर्कुलेशन सक्रिय हैं। इसी वजह से तेज आंधी-बारिश का दौर बना हुआ है। गुना, अशोकनगर, विदिशा, सीहोर, देवास, हरदा और बैतूल में ऑरेंज अलर्ट है।

1000+ पुलिसकर्मी, दिल्ली बॉर्डर पर कड़ी सुरक्षा

सीजेपी के प्रदर्शन के मद्देनजर इंदिरा गांधी एयरपोर्ट, मुख्य रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन और दिल्ली के बॉर्डर पॉइंट्स पर सुरक्षा बढ़ा दी गई थी। 1000 से ज्यादा पुलिस जवान पहले से तय पॉइंट्स पर तैनात किए गए थे। बाजारों और संवेदनशील इलाकों में कानून व्यवस्था बनाए रखने की हिदायत दी गई थी। अभिजीत ने कहा- कॉकरोच जनता पार्टी अपनी मांग पर अड़ी है। शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान इस्तीफा दें। उन्होंने धमेंद्र को इस्तीफे के लिए 5 दिन का अल्टीमेटम दिया है।

घुसपैठियों को लेकर

बांग्लादेश बॉर्डर पर भारी तनाव

● वापस भेजे जा रहे लोगों को देख भड़का बांग्लादेश सुरक्षा बल

बीएसएफ के साथ फ्लैग मीटिंग से किया इनकार, जमकर तनातनी

कोलकाता (एजेंसी)। भारत और बांग्लादेश की सीमा पर एक बार फिर तनावपूर्ण स्थिति पैदा हो गई है। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) और बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश ने एक-दूसरे पर घुसपैठ कराने और अवैध रूप से लोगों को सीमा पार धकेलने के गंभीर आरोप लगाए हैं। इस तनातनी के बीच सीमा पर स्थित नो-मैन्स लैंड पर बच्चों और महिलाओं सहित दर्जनों लोग फंसे हुए हैं। यह गतिरोध ऐसे समय में सामने आया है जब पश्चिम बंगाल सरकार ने राज्य में अवैध

रूप से रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों की पहचान करने और उन्हें वापस भेजने के लिए कई कड़े कदम उठाए हैं। बांग्लादेश के सीमा सुरक्षा बल (बीजीबी) ने शुक्रवार को एक आधिकारिक बयान जारी कर दावा किया कि भारतीय बीएसएफ ने गुरुवार और शुक्रवार के शुरुआती घंटों में कई बार लोगों को बांग्लादेशी क्षेत्र में धकेलने की कोशिश की।

● **बीजीबी का दावा-70 लोगों को रोका-** बीजीबी का दावा है कि उन्होंने जीरो-लाइन पर 70 से अधिक लोगों को बांग्लादेश में प्रवेश करने से रोका है। बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल मेहंदी इमाम ने बताया, ये लोग फिलहाल वहीं फंसे हुए हैं और हमारी सेना किसी भी तरह की घुसपैठ को रोकने के लिए हाई अलर्ट पर है। शुक्रवार सुबह नौगांव में 5 बच्चों सहित 17 लोगों को रोका गया। लालमोनिरहाट के तीन इलाकों रोका है।

दोनों देशों ने पल्ला झाड़ा, फ्लैग मीटिंग से इनकार

बीएसएफ और बीजीबी दोनों ही बलों ने इन 10 लोगों को अपना नागरिक मानने से इनकार कर दिया है, इसलिए वे कड़कड़ाती धूप और असुरक्षित माहौल में सीमा पर फंसे रहने को मजबूर हैं। स्थिति को संभालने के लिए बीएसएफ द्वारा एक फ्लैग मीटिंग बुलाने का प्रयास किया गया था, लेकिन खबरों के मुताबिक बीजीबी ने इस बैठक में शामिल होने से इनकार कर दिया। इसके बाद निगरानी बढ़ा दी है।

ईरान ने कुवैत बहरीन पर बोल दिया हमला

● बैलिस्टिक मिसाइलों और ड्रोन से किया धमाका ● अमेरिकी सेना ने मार गिराने का कर दिया दावा

तेहरान/कुवैत सिटी (एजेंसी)। अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने बताया कि शनिवार तड़के ईरान ने कुवैत, बहरीन और होर्मुज़ जलडमरूमध्य की तरफ एक के बाद एक कई बैलिस्टिक मिसाइलें और ड्रोन दागे जिन्हें अमेरिकी सेना ने बीच में ही इंटरसेप्ट कर लिया। कमांड के मुताबिक शुरुआती जांच से पता चला है कि छह मिसाइलों को रोक दिया गया और सातवीं मिसाइल किसी चीज से टकराने से पहले ही नाकाम हो गई। रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिकी सेना की तरफ से होर्मुज जलडमरूमध्य में ईरान ने समुद्री यातायात को बाधित करने के लिए चार ड्रोन हमला किया था जिसे मार गिराया गया और उसके बाद ईरान ने बैलिस्टिक मिसाइलें दागी हैं। ड्रोन को मार गिराने के बाद अमेरिका ने गोरुक और केशम द्वीप पर ईरानी सैन्य रडार साइटों पर हमला किया है। ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजी) ने कहा है कि अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बनाने के लिए कुवैत और बहरीन की तरफ 7 बैलिस्टिक मिसाइलें और कई ड्रोन दागे गये थे। लेकिन सेंट्रल कमांड ने सभी खतरों को खत्म करने की बात कही है। सीएनएन के मुताबिक यह पूरा टकराव स्ट्रेट ऑफ हॉर्मुज में हुआ जो दुनिया के तेल व्यापार का सबसे मुख्य समुद्री रास्ता है। अमेरिका ने ईरान के बंदरगाहों की नाकेबंदी की हुई है ताकि वह अपना तेल और सामान बाहर न बेच सके। ईरान के मुताबिक अमेरिकी सेना द्वारा गाइड किए जा रहे चार तेल टैंकर अवैध रूप से इस रास्ते से निकलने की कोशिश कर रहे थे जिसमें से ईरान ने एक को चेतावनी देकर रोक दिया। अमेरिकी सेंट्रल कमांड के अनुसार ईरान के आत्मघाती ड्रोनों से अंतरराष्ट्रीय जहाजों को खतरा था।

शुभेंदु सरकार बनते ही बंगाल में बुलेट ट्रेन का ऐलान

● मात्र छह घंटे में नई दिल्ली से पहुंचा देगी सिलीगुड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में पिछले महीने ही पहली बार भाजपा सरकार बनी है। शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व में चल रही बंगाल सरकार को लेकर बड़े-बड़े ऐलान हो रहे हैं। शनिवार को पश्चिम बंगाल में बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट को लेकर रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने अहम घोषणाएं कीं। उन्होंने कहा कि दिल्ली से सिलीगुड़ी के बीच प्रस्तावित बुलेट ट्रेन का उद्देश्य समय में कमी लाना है। ये हाई स्पीड कॉरिडोर सिलीगुड़ी को नई दिल्ली से सिर्फ छह घंटे में जोड़

देगा। अश्विनी वैष्णव ने कहा, बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट बंगाल के लिए प्रस्तावित है। यह दिल्ली से सिलीगुड़ी को वाया लखनऊ, वाराणसी, पटना जोड़ेगा। बुलेट ट्रेन से सिर्फ छह घंटे का ही समय लेगा। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को घोषणा की कि अगले पांच वर्ष में कोलकाता मेट्रो के लिए नई पीढ़ी की 60 ट्रेन शुरू की जाएंगी। उन्होंने उम्मीद जताई कि राज्य में डबल इंजन सरकार बनने पर पश्चिम बंगाल की रेलवे परियोजनाओं को नई गति मिलेगी। राज्य सचिवालय नबान्न में मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के साथ बैठक के दौरान रेल मंत्री ने कहा कि कोलकाता मेट्रो नेटवर्क के केवल 28 किलोमीटर हिस्से का निर्माण 42 वर्षों में पूरा हुआ था, जबकि मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से 45 किलोमीटर नई लाइन जोड़ी गई हैं।

रेलवे परियोजनाओं के लिए जमीन सौंपने की घोषणा

वहीं, पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने शनिवार को कहा कि आने वाले वर्षों में राज्य में लगभग एक लाख करोड़ रुपये की रेलवे परियोजनाएं लागू की जाएंगी। उन्होंने रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के साथ बैठक के बाद जिला अधिकारियों को इन परियोजनाओं के लिए आवश्यक भूमि रेलवे को सौंपने की टाइम टेबल तैयार करने का निर्देश दिया। राज्य की विभिन्न परियोजनाओं पर बैठक से पहले नबान्न सभागार में वैष्णव के साथ संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि राज्य और केंद्र के बीच संबंधों में सुधार हुआ है, जिससे रेलवे परियोजनाओं के तेजी से क्रियान्वयन का रास्ता साफ हुआ है। उन्होंने कहा, पिछली तृणमूल कांग्रेस सरकार के दौरान राज्य और केंद्र के बीच टकराव की स्थिति थी। इसके कारण बंगाल में रेलवे विकास लगभग ठप हो गया था। सरकार बदलने के साथ ही यह समस्या दूर हो जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के लिए लगभग एक लाख करोड़ रुपये की रेलवे परियोजनाएं प्रस्तावित हैं और राज्य के प्रत्येक जिले को रेलवे नेटवर्क से जोड़ा जाएगा।

● **बंगाल सरकार की पहल का वैष्णव ने किया स्वागत-** रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने राज्य सरकार की इस पहल का स्वागत करते हुए कहा कि केंद्र और राज्य सरकार के बीच सहयोग से रेलवे अवसंरचना विकास की गति तेज होगी। वैष्णव ने कहा, भूमि अधिग्रहण और विभिन्न मंजूरियों से जुड़े मामलों में राज्य सरकार का सहयोग हमें परियोजनाओं को कहीं अधिक तेजी से पूरा करने में मदद करेगा। हम रेल संपर्क का विस्तार करने और चल रही परियोजनाओं को निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। बैठक में पश्चिम बंगाल में चल रही रेलवे परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई तथा भूमि अधिग्रहण और परियोजनाओं की स्वीकृतियों से संबंधित अड़चनों को दूर करने के उपायों पर चर्चा हुई।

87 आदतन अपराधियों ने लिया अपराधमुक्त जीवन का संकल्प

पुलिस ने चलाया मेरा मोहल्ला-नो हो हल्ला अभियान

इंदौर। अपने मोहल्लों को सुरक्षित बनाने की दिशा में थाना हीरानगर में अनूठी पहल देखने को मिली। यहां पुलिस की पाठशाला के आयोजन में हीरा नगर, बाणगंगा क्षेत्र के आदतन अपराधियों को तलब कर सुधारात्मक संवाद आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सहायक पुलिस आयुक्त रुबीना मिजवानी ने उपस्थित युवकों से चर्चा की।

अधिकारी ने अपराध करने के बाद उनके परिवारों पर पड़े दुष्प्रभावों, सामाजिक बदनामी के बारे में जानकारी ली। इस दौरान कई बदमाशों ने अपने दुखद अनुभव साझा कर बताया कि अपराध के रास्ते ने उन्हें तथा उनके परिवार को किस प्रकार परेशानियों में डाला।

अधिकारियों ने समझाइश देते हुए कहा कि वास्तविक पश्चाताप तभी है जब व्यक्ति स्वयं अपराध से दूर रहे। इसी उद्देश्य से सभी उपस्थित लोगों ने एक स्वर में संकल्प लिया कि मेरा मोहल्ला नो हो हल्ला अभियान के तहत अपने क्षेत्र को अपराध मुक्त बनाएंगे। यदि किसी प्रकार की आपराधिक गतिविधि की जानकारी मिलेगी तो पुलिस को सूचना देंगे। इस दौरान 87 आदतन बदमाशों को अपराधियों को शामिल डोजियर भरवाए गए। आवश्यकतानुसार रेड एवं येलो नोटिस भी तामील कराए गए।

दुकान की गलत रिपोर्ट, बिल कलेक्टर निलंबित

इंदौर। नगर निगम की दुकान के संबंध में भ्रामक जानकारी देना मार्केट विभाग के बिल कलेक्टर संजय वर्मा को महंगा पड़ गया। निगम आयुक्त क्षितिज सिंघल ने उन्हें तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। मामला पालिका प्लाजा स्थित निगम की एक दुकान का है। अपर आयुक्त राजस्व आकाश सिंह ने दुकान की स्थिति की जानकारी मांगी थी, जिस पर बिल कलेक्टर ने रिपोर्ट दी कि दुकान रिक्त होकर निगम के आधिपत्य में है। हालांकि जांच के दौरान पाया गया कि दुकान का उपयोग एक गैस एजेंसी द्वारा गैस सिलेंडर रखने के लिए किया जा रहा था। मौके पर बड़ी संख्या में भरे हुए गैस सिलेंडर भी मिले। गलत और भ्रामक जानकारी देने पर निगम प्रशासन ने सख्त कार्रवाई करते हुए बिल कलेक्टर को निलंबित कर दिया।

युवक का शव जेसीबी पर लटका मिला

इंदौर। ससुराल आए युवक का शव जेसीबी पर लटका मिला। युवक ने आत्महत्या की थी। मामला खुड़ैल थाना क्षेत्र के आठ मील का है। मृतक की पहचान आमिर पिता तेजपाल (26) निवासी भोपाल के रूप में हुई है। वह रूद्राक्ष बेचने का काम करता था। आमिर का अपनी पत्नी से विवाद चल रहा था, इसके कारण वह मायके में चाचा ससुर के घर रह रही थी। आमिर अपनी पत्नी को समझा-बुझाकर वापस भोपाल ले जाने के लिए ससुराल आया था। बताया जा रहा है कि यहां पत्नी को विदा कराने की बात पर ससुराल पक्ष के लोगों से विवाद हो गया। इसी बीच, आमिर के चाचा ससुर ने पत्नी के इलाज का खर्च मांग लिया। इसी बात से आहत आमिर ने पत्नी से मरने की बात कही। इसके कुछ देर बाद ही ससुराल पक्ष और आसपास के लोगों ने देखा कि आमिर का शव पास ही खड़ी जेसीबी मशीन पर फंदे से लटका हुआ था।

18 जून से मेट्रो ट्रेन रेडिसन चौराहा तक चलेगी, 17 किमी बढ़ेगा सफर का दायरा

- **सुपर कॉरिडोर के संस्थान और एयरपोर्ट जाने वालों को राहत मिलेगी**

इंदौर। शहर में मेट्रो ट्रेन के सफर के साथ-साथ अब यात्रियों की संख्या में भी भारी बढ़ोतरी देखने को मिलेगी। वर्तमान में मेट्रो ट्रेन केवल 7 किलोमीटर के सीमित दायरे में चल रही है, परंतु आगामी 18 जून से इसका परिचालन बढ़ाकर 17 किलोमीटर कर दिया जाएगा।

इस विस्तारित मार्ग का औपचारिक शुभारंभ केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर हरी झंडी दिखाकर करेंगे। उल्लेखनीय है कि मेट्रो के व्यावसायिक संचालन को दो महीने पहले ही स्वीकृति मिल चुकी थी, जिसे अब धरातल पर उतारा जा रहा है। एक वर्ष के लंबे अंतराल के बाद मेट्रो सुपर कॉरिडोर से आगे कदम बढ़ाते हुए यात्रियों को लेकर रेडिसन चौराहा तक पहुंचेगी। मेट्रो परियोजना की समीक्षा बैठक में यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि 18 जून से गांधी नगर स्टेशन से रेडिसन चौराहा के बीच व्यावसायिक फेरे शुरू कर दिए जाएंगे। हालांकि, अभी तक मेट्रो प्रशासन द्वारा अंतिम किराया सूची की आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है, लेकिन अनुमान है कि इस मार्ग का अधिकतम किराया 80 रुपये तक हो सकता है।

यात्रियों की संख्या बढ़ने की संभावना

अब तक मेट्रो जिस सीमित क्षेत्र में दौड़ रही थी, वहां घनी आबादी नहीं होने के कारण यात्रियों की संख्या बहुत कम रहती थी। गांधी नगर से रेडिसन चौराहा तक सेवा विस्तार होने से यात्रियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होने की संभावना है। इस मार्ग के खुलने से सुपर कॉरिडोर स्थित सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियों के कर्मचारियों और विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को आवागमन में बहुत सुविधा होगी।

इसके अतिरिक्त, विमानतल जाने वाले यात्री भी इस सेवा का लाभ उठा सकेंगे, हालांकि उन्हें गांधी नगर स्टेशन पर उतरने के बाद विमानतल तक पहुंचने के लिए ऑटो रिक्शा या अन्य वाहनों का सहारा लेना होगा। गांधी नगर से रेडिसन चौराहा के मध्य 5 नए स्टेशन पूरी तरह बनकर तैयार हैं और विभिन्न गतियों पर मेट्रो का परीक्षण भी सफलतापूर्वक संपन्न किया जा चुका है।

80 किमी की स्पीड से दौड़ेगी

इस 17 किलोमीटर लंबे नए मार्ग पर मेट्रो ट्रेन 80 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ेगी, जिससे गांधी नगर से रेडिसन चौराहा तक की दूरी मात्र 20 मिनट में तय हो सकेगी। प्रथम चरण की योजना के अनुसार मेट्रो का संचालन खजराना चौराहा तक किया जाना है, जिसके बाद आगे का मार्ग भूमिगत रहेगा, हालांकि भूमिगत खंड का निर्माण कार्य अभी आरंभ नहीं हुआ है। वर्तमान में 7 किलोमीटर के सफर के लिए अधिकतम किराया 30 रुपये लिया जा रहा है, जो 17 किलोमीटर का सफर होने पर अधिकतम 80 रुपये तक पहुंच जाएगा।

एक ट्रेन में 450 यात्री होंगे

जब पूरे 30 किलोमीटर लंबे मार्ग का काम पूरा हो जाएगा, तब प्रत्येक 30 मिनट के अंतराल पर मेट्रो उपलब्ध रहेगी। भविष्य में पूरे शहर के 28 स्टेशनों से होकर 20 से अधिक मेट्रो ट्रेन गुजरेंगी। एक मेट्रो ट्रेन में लगभग 450 यात्री यात्रा कर सकेंगे, जिनके बैठने और खड़े होने के लिए पर्याप्त व्यवस्था होगी। यात्रियों की सुविधा के लिए डिब्बों के भीतर लगे खंभों में 4 पकड़ने वाली ग्रिप दी गई हैं। सुरक्षा के दृष्टिकोण से मेट्रो ट्रेन अंदर और बाहर, दोनों तरफ से पूरी तरह से सीसीटीवी कैमरों की निगरानी में रहेगी।

इंदौर में आग की बढ़ती घटनाएं बनी चिंता का कारण, 7 की मौत भी हुई

रिहायशी इलाकों से गोदामों तक हादसों ने सुरक्षा पर उठाए सवाल

इंदौर। प्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर में आग लगने की घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं। बीते कुछ समय में हुए कई बड़े हादसों ने न केवल जनहानि की है, बल्कि अग्नि सुरक्षा व्यवस्थाओं की वास्तविक स्थिति को भी उजागर किया है।

रिहायशी क्षेत्रों से लेकर वाहनों के भंडारण स्थलों तक आग की घटनाओं का सिलसिला लोगों के बीच भय और चिंता का कारण बन गया है। विशेष रूप से विद्युत चालित वाहनों में उपयोग होने वाली बैटरियों से जुड़े हादसों ने नई चुनौती खड़ी कर दी है। सबसे दर्दनाक घटना ब्रजेश्वरी एनेक्स क्षेत्र में सामने आई थी, जहां उद्योगपति मनोज पुगलिया के मकान में भीषण आग लग गई थी। आग इतनी तेजी से फैली कि घर में मौजूद लोगों को बाहर निकलने का अवसर नहीं मिल सका। इस हादसे में मनोज पुगलिया, उनके मामा-मामी सहित कुल सात लोगों की जिंदा जलने से मृत्यु हो गई थी। इस घटना ने पूरे शहर को झकझोर दिया था। प्रारंभिक जांच में आग के तेजी से फैलने और बचाव के सीमित अवसरों को हादसे की बड़ी वजह माना गया था।

बैटरियों का असुरक्षित भंडारण- लगातार सामने आ रही इन घटनाओं ने शहर में अग्नि सुरक्षा को लेकर बहस तेज कर दी है। विशेषज्ञों का मानना है कि रिहायशी इलाकों और व्यावसायिक परिसरों में सुरक्षा मानकों का सख्ती से पालन नहीं होने के कारण जोखिम बढ़ रहा है। वहीं विद्युत चालित वाहनों की संख्या बढ़ने के साथ बैटरियों के सुरक्षित भंडारण और उपयोग को लेकर अतिरिक्त सावधानी की आवश्यकता महसूस की जा रही है। शहरवासियों का कहना है कि आग की घटनाओं के बाद केवल जांच और निर्देश जारी करना पर्याप्त नहीं है। आवश्यक है कि भवनों, गोदामों और ऐसे सभी परिसरों का नियमित निरीक्षण किया जाए, जहां ज्वलनशील सामग्री या बैटरियों का भंडारण किया जाता है। साथ ही आपात स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त उपकरण और प्रशिक्षण की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

इंदौर में हाल के दिनों में हुई ये घटनाएं स्पष्ट संकेत दे रही हैं कि यदि सुरक्षा उपायों को लेकर गंभीरता नहीं दिखाई गई, तो भविष्य में और बड़े हादसे सामने आ सकते हैं। ऐसे में प्रशासन, कारोबारियों और आम नागरिकों को मिलकर सुरक्षा के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है, ताकि जनधन की हानि को रोका जा सके।

स्कीम नंबर 136 का हादसा

ताजा मामला गुरुवार को स्कीम नंबर 136 के समीप खालसा चौक स्थित एक अन्य विद्युत चालित रिक्शा भंडारण स्थल का है। यहां भी बैटरी में विस्फोट होने के बाद आग लग गई। आग लगते ही क्षेत्र में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। आसपास रहने वाले लोगों ने तत्काल सतर्कता दिखाई और आग बुझाने के प्रयास शुरू कर दिए। सूचना मिलने पर राहत दल भी मौके पर पहुंचा और आग पर काबू पा लिया गया। समय रहते किए गए प्रयासों के कारण बड़ा हादसा टल गया और वहां रह रहे लोगों की जान बच गई।

बैटरियों में विस्फोट होने से आग

इसके बाद 5 मई को गुलाब बाग क्षेत्र में स्थित विद्युत चालित रिक्शों के एक भंडारण स्थल में आग लगने की घटना सामने आई। बताया गया कि वहां रखी बैटरियों में विस्फोट होने के बाद आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। देखते ही देखते लपटों ने पूरे परिसर को अपनी चपेट में ले लिया। इस घटना में 20 से अधिक वाहन जलकर नष्ट हो गए थे।

4 हत्याओं में शामिल बदमाश निकला नवीन पाटीदार हत्याकांड का सूत्रधार

बदले की भावना में रची साजिश, 15 लाख रु में तय हुई थी हत्या

इंदौर। राऊ क्षेत्र के चर्चित नवीन पाटीदार हत्याकांड में पुलिस ने जिस राहुल मराठा को गिरफ्तार किया है, वह कोई साधारण अपराधी नहीं, बल्कि कई गंभीर वारदातों में शामिल रह चुका शातिर बदमाश है। पुलिस के अनुसार राहुल अपराध जगत में %डॉन% के नाम से जाना जाता था और उसके खिलाफ पहले से चार हत्याओं में संलिप्तता के आरोप हैं। लंबे समय से फरार चल रहे राहुल को आखिरकार पुलिस ने मुंबई से पकड़ लिया। 12 अप्रैल को नवीन पाटीदार की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। शुरुआत में मामला दुर्घटना जैसा प्रतीत हुआ था, लेकिन शव परीक्षण प्रतिवेदन और बाद की जांच में कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। पुलिस को पता चला कि मृतक और आरोपियों के बीच लंबे समय से विवाद और दुश्मनी चली आ रही थी। इसी आधार पर जांच आगे बढ़ाई गई और हत्या के पीछे रची गई पूरी साजिश उजागर हो गई।

भाई की हत्या का बदला

पुलिस ने इस मामले में राहुल मराठा, उसके साथी शुभम तथा उज्जैन निवासी राजू खटीक को गिरफ्तार किया है। पूछताछ में राहुल ने बताया कि राजू खटीक ने अपने भाई की हत्या का बदला लेने के उद्देश्य से नवीन पाटीदार को मरवाने की योजना बनाई थी।

अहिल्या गौरव अलंकरण से सम्मानित

इंदौर। कर्मवीर स्वामी विवेकानंद ट्रस्ट एवं अनंत सेवा न्यास द्वारा देवी अहिल्या जयंती पर प्रीतमलाल दुआ सभागृह में समारोह आयोजित हुआ। इसमें डीएवीवी के कुलगुरु आरके सिंघई, एडी पुलिस कमिश्नर सीमा अलावा के आतिथ्य में महिला एवं बाल विकास और बाल कल्याण समिति की अनिता साहू एवं बाल विवाह विरोधी उड़नदस्ता सदस्य संगीता सिंह को देवी अहिल्या गौरव अलंकरण से सम्मानित किया। कार्यक्रम में दो नन्ही बालिकाओं ने देवी अहिल्या के जीवन को लघु नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत किया। समारोह में विभिन्न क्षेत्रों में श्रेष्ठ सेवाएं देने वाली 31 नारी शक्ति को सम्मानित किया गया। स्वागत मौनिक मालवीय एवं रेणुका चंदेल ने किया। आभार संस्था के प्रकाश मानावत ने माना।

पिता की मौत के बाद उनके नाम लिया कर्ज, किस्त रुकी तो धोखाधड़ी खुली

वसूली कर्मचारी घर पहुंचा तो पता चला 2021 में ही हो चुका निधन

इंदौर। विजयनगर थाना क्षेत्र में एक युवक ने अपने दिवंगत पिता की पहचान का उपयोग कर लाखों रुपये का कर्ज ले लिया। घटना का खुलासा तब हुआ, जब किस्तों का भुगतान बंद होने पर वित्तीय संस्था का वसूली कर्मचारी संबंधित पते पर पहुंचा। वहां उसे जानकारी मिली कि जिस व्यक्ति के नाम पर कर्ज स्वीकृत हुआ था, उनका निधन तो वर्षों पहले हो चुका है।

मामले में पुलिस ने बजरंग नगर निवासी अंकित चौहान के खिलाफ धोखाधड़ी, गबन और मृत व्यक्ति के नाम का दुरुपयोग कर आर्थिक लेनदेन करने के आरोप में प्रकरण दर्ज किया है। शिकायत वित्तीय संस्था के इंदौर कार्यालय में कार्यरत आकाश गौतम ने की थी।

पुराने अभिलेखों के आधार पर स्वीकृति- शिकायत के अनुसार अच्छेलाल रामचीज चौहान के नाम पर 2 लाख 12 हजार रुपये का कर्ज स्वीकृत किया गया था। अच्छेलाल पहले भी संस्था के ग्राहक रह चुके थे और उन्होंने पूर्व में लिया गया कर्ज समय पर चुका दिया था। संस्था के अभिलेखों में उपलब्ध जानकारी के आधार पर उनकी पहचान से 20 जनवरी 2024 को नया कर्ज स्वीकृत कर दिया गया। कुछ समय तक किस्त नहीं आने पर संस्था ने वसूली की प्रक्रिया शुरू की। जब कर्मचारी घर पहुंचा तो परिवार से पता चला कि अच्छेलाल का निधन 21 अगस्त 2021 को ही हो चुका था। इसके बाद पूरे मामले की जांच शुरू की गई।

पिता का मोबाइल इस्तेमाल किया

जांच के दौरान सामने आया कि अच्छेलाल का मोबाइल नंबर उनका बेटा अंकित चौहान उपयोग कर रहा था। पुलिस के अनुसार उसी ने पिता की पहचान का इस्तेमाल कर कर्ज प्राप्त किया। पूछताछ में अंकित ने बताया कि वह रैपिडो चलाता है और उसकी बहन पिता का मोबाइल फोन इस्तेमाल कर रही थी। उसने बताया कि मोबाइल पर वित्तीय संस्था के संदेश आए थे, जिन पर दो बार सहमति दे दी गई। इसके बाद कर्ज स्वीकृत हो गया। पुलिस का कहना है कि इसी प्रक्रिया का लाभ उठाकर आरोपी ने पूरी राशि हासिल कर ली।

इंदौर से नेपाल के लिए विशेष रेल 12 जून से शुरू 10 दिन की यात्रा

इंदौर। मध्य प्रदेश और नेपाल के बीच धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में एक नई पहल होने जा रही है। भारतीय रेल और भारतीय रेल खानपान एवं पर्यटन निगम पहली बार 'भारत गौरव योजना' के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय सीमा पार विशेष पर्यटक रेल का संचालन करने जा रहे हैं। 'पशुपतिनाथ नेपाल दर्शन यात्रा' नाम से शुरू की जा रही यह विशेष रेल 12 जून 2026 को इंदौर से रवाना होगी। 9 रात और 10 दिन की इस यात्रा को विशेष रूप से मध्य प्रदेश के श्रद्धालुओं और पर्यटकों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। यात्रा का उद्देश्य नेपाल के प्रमुख धार्मिक और दर्शनीय स्थलों तक सुविधाजनक, सुरक्षित और व्यवस्थित पहुंच उपलब्ध कराना है, ताकि यात्रियों को अलग-अलग व्यवस्थाओं की चिंता न करनी पड़े।

पशुपतिनाथ सहित नेपाल के प्रमुख तीर्थ देख सकेंगे श्रद्धालु

तीन श्रेणियों में निर्धारित शुल्क

यात्रियों की आवश्यकताओं और सुविधाओं के आधार पर यात्रा शुल्क को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है। तीसरा वातानुकूलित श्रेणी का शुल्क 62,710 रुपये निर्धारित किया गया है। डीलक्स द्वितीय वातानुकूलित श्रेणी के लिए 76,550 रुपये और प्रथम वातानुकूलित श्रेणी के लिए 90,400 रुपये का भुगतान करना होगा।

आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित रेल

यह विशेष पर्यटक रेल 14 आधुनिक डिब्बों से सुसज्जित होगी। इसमें लगभग 150 यात्रियों के लिए ही स्थान रखा गया है। सीमित यात्रियों और विशेष सुविधाओं के कारण यह सामान्य यात्री रेल की अपेक्षा एक चलते-फिरते विश्रामगृह जैसी अनुभूति प्रदान करेगी। यात्रियों की सुरक्षा के लिए रेल में चौबीसों घंटे निगरानी की व्यवस्था रहेगी। सभी डिब्बों में निगरानी कैमरे लगाए गए हैं तथा विशेष सुरक्षा दल यात्रा के दौरान तैनात रहेगा। यात्रियों की सुविधा के लिए उनके कक्षों में मूल्यवान वस्तुओं को सुरक्षित रखने हेतु इलेक्ट्रॉनिक तिजोरियां उपलब्ध कराई जाएंगी।

यात्रा शुल्क में शामिल सुविधाएं

इस विशेष पैकेज में नेपाल में 3 सितारा श्रेणी के आवास की व्यवस्था शामिल रहेगी। इसके साथ ही यात्रा के दौरान रेल में तथा विभिन्न स्थलों पर सभी शाकाहारी भोजन उपलब्ध कराए जाएंगे। स्थानीय भ्रमण के लिए वातानुकूलित बसों की व्यवस्था भी पैकेज का हिस्सा होगी। यात्रियों को यात्रा बीमा की सुविधा दी जाएगी और पूरे समूह के साथ अनुभवी यात्रा प्रबंधक भी मौजूद रहेंगे, जो यात्रा के संचालन और आवश्यक मार्गदर्शन का कार्य करेंगे।

निवेशकों की नजर इंदौर पर

इस नई अंतरराष्ट्रीय रेल सेवा को मध्य भारत और नेपाल के बीच संपर्क का महत्वपूर्ण माध्यम माना जा रहा है। परिवहन सुविधाओं के विस्तार के साथ इंदौर की पहचान एक तेजी से विकसित होते शहर के रूप में और मजबूत हुई है। यही कारण है कि दीर्घकालिक निवेश की योजना बनाने वाले लोग भी शहर की ओर आकर्षित हो रहे हैं और यहां आवासीय संपत्तियों में रुचि बढ़ती दिखाई दे रही है।

डेक्कन-डायरी

डॉ. सुधीर सक्सेना

तमिलनाडु - अब क्या करेंगे अन्नामलै?

अन्नामलै की उम्र ज्यादा नहीं है। यही कोई 42 वर्ष। चार जून को वह 42 वर्ष के हो गये। वह किसी राजनीतिक घराने में नहीं जनमे। वह करूर में थोटमपट्टी में पैदा हुये। पीएसजी कालेज से इंजीनियरिंग में उपाधि के बाद उन्होंने आईआईएम, लखनऊ में शिक्षा प्राप्त की और भारतीय पुलिस सेवा में रहे। सहायक पुलिस अधीक्षक से शुरू कर वह पुलिस उपायुक्त पद तक पहुंचे। वह पश्चिमी तमिलनाडु के प्रभावशाली कुलक समुदाय से ताल्लुक रखते हैं। बतौर आईपीएस अफसर उन्होंने उडूपी में अपराध नियंत्रण के लिये प्रभावी कदम उठाये। तदंतर मणिपाल में उन्होंने नशाखोरी के खिलाफ मुस्तैदी से जनजागृति अभिान चलाया। बेंगलूरू दक्षिण में उपायुक्त पद तक पहुंचने तक उनकी ख्याति बतौर 'सिंघम' चतुर्दिक फैल गयी थी।

अन्नामलै कुप्पुस्वामी यानि के. अन्नामलै का त्यागपत्र पार्टी अध्यक्ष नितिन नबीन अंततः स्वीकार कर लिया है और इसी के साथ ही उनके भावी कदमों को लेकर नये सिरे से कयासों का दौर शुरू हो गया है। स्पष्ट है कि नितिन नबीन, अमित शाह और बीएल संतोष से उनकी वार्ताएं। विफल रहीं। पार्टी उन्हें फ्री हैंड देने और लंबी चौड़ी मांगे मानने को तैयार नहीं हुई। फलतः अब वह अपनी पारी अपने तरीके से आगाज करने को स्वतंत्र हैं। समझा जा रहा है कि वह पार्टी से बेतरह क्षुब्ध थे और उन्होंने इसी रौ में राज्यसभा का ऑफर भी ठुकरा दिया। उनके रवैये ने इसी पुष्टि कर दी कि प्रदेश बीजेपी के मुखिया एन. नगेन्द्रन से उनकी पटरी नहीं बैठ रही है और पार्टी को मजबूत करने का उनका खाका शीर्ष-नेतृत्व को मंजूर नहीं है। अन्नामलै की उम्र ज्यादा नहीं है। यही कोई 42 वर्ष। चार जून को वह 42 वर्ष के हो गये। वह किसी राजनीतिक घराने में नहीं जनमे। वह करूर में थोटमपट्टी में पैदा हुये। पीएसजी कालेज से इंजीनियरिंग में उपाधि के बाद उन्होंने आईआईएम, लखनऊ में शिक्षा प्राप्त की और भारतीय पुलिस सेवा में रहे। सहायक पुलिस अधीक्षक से शुरू कर वह पुलिस उपायुक्त पद तक पहुंचे। वह पश्चिमी तमिलनाडु के प्रभावशाली कुलक समुदाय से ताल्लुक रखते हैं। बतौर आईपीएस अफसर उन्होंने उडूपी में अपराध नियंत्रण के लिये प्रभावी कदम उठाये। तदंतर मणिपाल में उन्होंने नशाखोरी के खिलाफ मुस्तैदी से जनजागृति अभिान चलाया। बेंगलूरू दक्षिण में उपायुक्त पद तक पहुंचने तक उनकी ख्याति बतौर 'सिंघम' चतुर्दिक फैल गयी थी।

यह मानने के पर्याप्त कारण है कि अन्नामलै महत्वाकांक्षी व्यक्ति हैं। इसी के चलते उन्होंने मई, 2019 में पद से इस्तीफा दे दिया। कयासों को विराम देते हुये अगले ही साल अगस्त में उन्होंने बीजेपी का दामन थामा और प्रदेश ईकाई के उपाध्यक्ष बन गये। शिखर नेतृत्व की नजरों में चढ़ने का ही नतीजा था कि अगले ही वर्ष आठ अगस्त, 2021 मो वह एल. मुरूगन को अपदस्थ कर तमिलनाडु, बीजेपी के मुखिया हो गये। जुलाई, 23 से फरवरी, 24 के दरम्यान उन्होंने 'एनमन्न एन मक्काल' (हमारी धरती, हमारे लोग) यात्रा निकाली और बीजेपी को प्रदेशों में ओरछोर फैला दिया। इसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी शिरकत की।

अन्नामलै तुर्श जुबां उग्र नेता हैं। उनकी आडियो श्रंखला डीएमके फाइल्स पर मामला अदालत में गया और उन्हें चेतावनी भी मिली। अन्नदुरै और जयललिता पर तीखी बयानबाजी महंगी पड़ी और अन्नाद्रमुक ने सहयोग से हाथ खींच लिया। उन्होंने पीएमके, टीएमसी और एएमएमके से भी हाथ मिलाया, लेकिन भाजपानीत गठबंधन संसदीय चुनाव में चारों खाने चित हो गया। डीएमके ने अपने सहयोगियों के साथ सभी 39 सीटें जीत लीं। और तो और कोयंबटूर में अन्नामलै को एक लाख से अधिक वोटों से हार का सामना करना पड़ा। रही सही कसर उनकी अन्नाद्रमुक नेता पलनीस्वामी की निंदा ने पूरी कर दी। अंततः अन्नद्रमुक ने बीजेपी से संबंध विच्छेद कर लिये। इस बीच एक और घटना यह घटी कि अन्नामलै को प्रदेश अध्यक्ष पद से हटाकर नैनार नगेंद्रन को अध्यक्ष बना दिया गया। बताते हैं कि इसके पीछे पलनीस्वामी की जिद की अहम भूमिका थी। बहरहाल, हाल के असेंबली चुनाव में उन्हें उपेक्षा का सामना करना पड़ा। खिन्न होकर उन्होंने स्वयं भी चुनाव लड़ने से इंकार कर दिया और अंततोगत्वा पार्टी की ओर से पीठ फेरने का फैसला किया। राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियों में उभरने के बावजूद अन्नामलै असफल नेता है। सन 2024 में कोयंबटूर के गढ़ से लोस चुनाव हारने के पूर्व अन्नामलै सन 2021 में अरवाकुरीचि से असेंबली चुनाव हार चुके हैं। बावजूद इसके उभरते सितारे और संभावनाशील नेता के तौर पर अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों की उन पर निगाह है। इसी का नतीजा है कि उन्हें अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक और डायस्पोरा संबंधित आयोजनों में बुलाया गया। सन 2022 और 2023 में वे श्रीलंका गये। सन 2023 में उन्हें नेहरू सेंटर, लंदन में इंडिया ग्लोबल फोरम में बुलाया गया। ब्रिक्स से जुड़े एक आयोजन में शिरकत के लिए वह बीजेपी के चार सदस्यों के शिष्ट मंडल के नेता के तौर पर जोहांसबर्ग भी गये। सन 2024 में उन्होंने ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी के एक फेलोशिप प्रोग्राम में भी भाग लिया। इसी क्रम में सन 2025 और सन 2026 को उन्होंने अमेरिका में स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय की स्टैनफोर्ड इंडिया कांफ्रेंस में तेजस्वी सूर्या और शशि थरूर जैसे सांसदों के साथ बतौर वक्ता शिरकत की। स्पष्ट है कि अन्नामलै विश्व परिदृश्य में उभरते चेहरों में शामिल है।

यूं भी उन्हें सुर्खियों में रहने का शौक है। वह जहरबुझे बयानों के लिये तो जाने ही जाते हैं, बेशकीमती घड़ी और काश्त खरीदी के लिये भी सुर्खियां बटोर चुके हैं। एक बारगी उन्होंने स्वयं को कोड़े लगाने और द्रमुक को सत्ता से हटाने तक जूते नहीं पहनने का ऐलान किया था। नगेंद्रन की मनुहार पर वह बमुश्किल माने थे। उनकी सबसे बड़ी सफलता यह है कि सन 2021 के असेंबली चुनाव में उन्होंने बीजेपी का मत-प्रतिशत तीन से 11 फीसद तक पहुंचा दिया था। उनकी उपेक्षा के बाद मत-प्रतिशत के मान से तमिलनाडु में बीजेपी 'पुनर्मुषकोभव' यानि तीन प्रतिशत मत की स्थिति में पहुंच गयी है। खबर है कि अब वह नयी पार्टी का गठन करना चाहते हैं। थलपति विजय और पवन कल्याण की कामयाबी के दृष्टांत उनके सामने हैं। वह रजनीकांत और अजित के संपर्क में बताये जाते हैं। वह मक्कल शक्ति इयक्कम (लोक शक्ति आंदोलन) भी छेड़ सकते हैं। बहरहाल, अन्नामलै का इस्तीफे का प्रसंग अलबेला है। ऐसा दर्जनों बार हुआ है कि लोगों ने इस्तीफे का प्रेसवार्ता में ऐलान किया अथवा खबर भेजी अथव ट्वीट किया। इस्तीफा लेकर कोई आलाकमान की दर तक नहीं जाता। यह बहुत कुछ 'म्युचुअल डाइवोर्स' सरीखा लगता है। यह रजामंदी से तलाक जैसा राजनीतिक प्रसंग है। रिश्ते टूट जाएं और जुड़ें तो गांठ भी न पड़े। बताते हैं कि अन्नामलै बीजेपी संगठन पर एकछत्र राज और निष्कंटक संचालन चाहते थे। वह बीजेपी नेतृत्व को खफा भी नहीं करना चाहते थे और इच्छापूर्ति भी चाहते थे। उनकी जुबां बीजेपी की पॉलिसी के अनुरूप और उसके पास अन्नामलै का कोई विकल्प या स्थानापन्न भी नहीं है। केन्द्रीय सूत्रधारों ने इसका भी आकलन किया होगा कि क्या अन्नामलै पार्टी के बाहर रहकर पार्टी के लिए ज्यादा मददगार हो सकते हैं? यह भेदभरा खेल पार्टी अनेक प्रदेशों में बखूबी खेल चुकी है। बहरहाल, अब गेंद अन्नामलै के पाले में है और उन्हें सियासत के मैदान में टिके रहने की अपनी कुव्वत का सुबूत देना है।

राजकुमार कुम्भज की दो कविता?

एक ओस-कण है आदमी

दूसरों को अज्ञानी समझते हुए
खुद को चरम ऋषि समझ रहा है आदमी
चोर क्या देखे,मोर क्या देखे,नाचे-नाचे
मोर-चोर खुद ही बन गया है आदमी
धूप-धूप खेलते हुए,झोंकता है धूल
आँखें अपनी ही खो रहा है आदमी
खोटी अठन्नी-चवन्नी दिखा-दिखाकर
सिक्के सोने के हड़प रहा है आदमी
समझ-समझ के फेर में,है समझ का फेर
समझ के फेर में उलझ रहा है आदमी
पत्थर पूजकर देवता बना रहा है आदमी
और पत्थर से बद्तर हो रहा है आदमी
राख,धूल,मिट्टी है,सब जानता है आदमी
राख,धूल,मिट्टी से कम हो रहा है आदमी
हर आदमी के भीतर छुपा है ये आदमी
इसी आदमी से लड़ रहा है ये आदमी
आदमी है अच्छा कि है शैतान का बच्चा
आदमी को ही नोंच खा रहा है आदमी
हरे पत्ते पर एक ओस-कण है ये आदमी
सुबह होते ही सो जाएगा ये आदमी।

गहरी नींद है मृत्यु

गहरी नींद है मृत्यु की मानिंद
जागता रहा हूँ कि हुईं हैं शताब्दियां
शायद किसी एक खिड़की के इंतज़ार में
कहीं कोई एक दस्तक सुनाई देगी धीरे से
सिर मेरा ही टकराएगा मेरी ही दीवारों से
कोई पुकारेगा उधर से बार-बार एक दिन
इधर घन-घनाती रहेगी फ़ोन की घंटी
शोर होता रहेगा,बाँसुरी बजती रहेगी
महुआ बीनती रहेंगी आदिवासी औरतें
परचून पर बिकता रहेगा मिर्च-मसाला
चूल्हे में राख होती रहेंगी सूखी लकड़ियाँ
सूना-सूना,वीराना सब लिखते रहेंगे कवि
फिर-फिर खिलते रहेंगे फूल जँगल-जँगल
शेष जो रहेंगे,सुनेंगे क़िस्से-कहानियां
ग़र याद रहे।

पाताल का कत्ल

कहानी

रविकांत राऊत

इंजीनियर विकास बाबू ने जब से रिटायर होकर शहर के किनारे अपनी नई कोठी बनाई थी, उनका सीना गर्व से चौड़ा रहता था। कोठी पूरी तरह 'नेट-ज़ीरो' थी। छत पर चमचमाते हुए 25 किलोवाट के सोलर पैनल लगे थे। वे अक्सर कॉलोनी के लोगों को इकट्ठा करके ज्ञान देते, भाई, कार्बन फुटप्रिंट कम करो। देखो, मेरी कोठी पूरी तरह ग्रीन-एनर्जी पर चलती है। मैं प्रकृति का कर्ज उतार रहा हूँ।

विकास बाबू की पत्नी सुमित्रा को बागवानी का शौक था। पर शौक से ज्यादा उन्हें अपनी संपन्नता का प्रदर्शन पसंद था। कोठी के लॉन में मखमली विदेशी घास लगी थी, जिसे रोज़ सैकड़ों लीटर पानी चाहिए था। पहले जब ग्रिड की बिजली थी, तो बिजली के भारी बिल के डर से सुमित्रा सोच-समझकर पानी का पंप चलाती थीं। लेकिन जब से सोलर पैनल लगे, सब बदल गया।

अब सुबह धूप खिलते ही घर के तीन हॉर्सपावर के गहरे बोरवेल का स्विच ऑन हो जाता। पानी की मोटी धार लॉन को बहाती हुई सड़क पर बहती। सुमित्रा गर्व से कहतीं, सूरज देवता की कृपा है, अपनी जेब से एक ढेला नहीं जाता। जितनी धूप, उतनी बिजली, उतना पानी!

सिर्फ पानी ही क्यों, कोठी के पांच कमरों में पांच इन्वर्टर एसी दिन-रात चलते थे। विकास बाबू का तर्क था कि सोलर इनवर्टर को आराम देने की क्या ज़रूरत है? बिजली तो मुफ़्त की है, वेस्ट थोड़ी हो रही है, सूरज से ही तो आ रही है!

उसी कोठी के बाहर, सड़क पार एक छोटी सी बस्ती थी। वहां रामू अपनी बूढ़ी मां के साथ रहता था। रामू का एक छोटा सा पारंपरिक कुआं था, जिससे उसकी मां पीढ़ियों से पानी खींचती थी। पिछले एक साल से विकास बाबू के घर की मुफ़्त सौर-ऊर्जा ने पाताल से इतना पानी खींच लिया था कि रामू के कुएं का जलस्तर पूरी तरह गिर गया। कुआं सूख चुका था।

एक दोपहर, जब बाहर का तापमान 45 डिग्री को छू रहा था, विकास बाबू की कोठी के पांचों एसी बाहर की तरफ भयंकर गर्म हवा फेंक रहे थे। कोठी के चारों तरफ गर्मी का एक ऐसा अदृश्य कुआं बन गया था कि राह चलते परिंदे भी झुलस जाएं।

तभी रामू की बूढ़ी मां विकास बाबू के आलीशान ग्रीन-गेट पर आई। उसके हाथ में एक खाली बाल्टी थी। अंदर लॉन में पानी का पाइप खुला छूटा था और पानी बहकर नाली में जा रहा था।

बाबूजी, कुआं सूख गया। पीने को एक बाल्टी पानी मिल जाता... आपकी तो मुफ़्त की बिजली है। बुढ़िया ने याचना की।

विकास बाबू ने चश्मा ठीक करते हुए कहा, देखो माई, पानी इस तरह बांटने के लिए नहीं है। हमारी घास सूख जाएगी। और वैसे भी, हम पर्यावरण प्रेमी लोग हैं, बर्बादी बर्दाश्त नहीं करते।

बुढ़िया ने बहते हुए पानी को देखा, फिर छत पर लगे उन सोलर पैनलों को देखा जो सूरज की रोशनी को सोख रहे थे, और अंत में कोठी से निकल रही उस खौलती हुई एसी की हवा को महसूस किया जिसने पूरी सड़क को भट्टी बना दिया था।

वह बिना कुछ बोले मुड़ी। उसने मन ही मन सोचा—ये वो लोग हैं जिन्होंने सूरज को तो अपना गुलाम बना लिया, लेकिन अपने लालच को आज तक आज़ाद नहीं कर पाए। हरित तकनीक ने विकास बाबू का बिल तो शून्य कर दिया था, लेकिन उनकी मानवीय संवेदना को भी शून्य बना दिया था।

कविता

नकटउरा

डॉ श्यामबाबू शर्मा

पुरुष ने चाहा कि वह महफूज रहे
पलने लगी पिता की देख रेख में
सयानी तो छोटे भाई की निगरानी में
ब्याही गई तो पति की सुरक्षा में
जने सुपुत्र तो उनकी सहमति में
लड़े समाज तो भद्दी गालियों में
पूरे हुए प्रतिशोध उसके बलात् से
उसे संस्कार मिला...
पुरुष पर आंच आये
तो उससे पहले जलो
उसके लिए तपो
आयें यमदूत तो आगे रहो
तुम अपने भाई पति पुत्र के लिए जियो
पी जाओ विष औ मरजाद में जियो
पुरुष ने रचीं पोथियां प्रशंसा में
बिधिउ न नारि ह्दय गति जानी
उसने बारात सजाई
पुत्र की तुष्टि हो
बधू की पेटरिया जुटाई
हाथी घोड़ा रथ जुताये
मंगल गीत और गारी गवाई
कभी द्वार चार औ पैंपुंजी करवाई
जिस मुहूरत में सात फेरे हुए
नकटउरा में वही रस्म कराई
मधुचंद्र विलास का टोटका हुआ
पुरुष ने विमर्श किया
बाजार बनी
नख शिख पर
लंबाई चौड़ाई पर
ग्रीवा गौरांग पर
अधर अधरोष्ठ पर
कटि कमनीयता पर
अंग प्रत्यंग पर
रस और रास पर
श्लील-अश्लील पर
संतति बढ़ी
समय बदला
संदर्भ बदले
अश्लील क्या था
बलइया या श्लील का अश्लील
इधर रचे गए द्विअर्थी
उत्तेजक भद्दे गीत
इनका सम्मान बढ़ा
स्त्री..
उसने सौंप दिया सर्वस्व
पुरुष समाज को
वह सोचती है
ग़लती कहां हुई
श्लील में अश्लील में
पुरुष की बलइया में
पुरुष पर विश्वास में
पिता में
भाई में
पति में
पुत्र में
कल में
आज में
भविष्य में
गलती कब कहां हुई !
कदाचित
पुरुष के लिए नकटउरा में
या पुरुष की ही रची सृष्टि में?

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यक्तित्व

विजय जोशी
पूर्व ग्रुप महाप्रबंधक, भेल भोपाल

जब कोई अपने हाथ में लेकर चला कुदाल
दुनिया को करना पड़ा उसका इस्तकबाल

श्रम से बड़ा कोई कर्म नहीं और सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं। कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता। काम तो तब बड़ा बनता है जब उसमें सेवा का भाव समाहित हो। यह हुई पहली बात।

दूसरी यह कि विरासत वह थाती है जिसके दम पर हम अपने पैरों पर खड़े होते हैं और हमारे जेहन में उस पर गर्व होना चाहिये, शर्म नहीं।

हाल ही में इस प्रसंग से हमारा साक्षात्कार हुआ विदेश मंत्री जयशंकर द्वारा इस मई, 2026 माह में त्रिनिदाद की यात्रा के दौरान जहां उनकी भेंट हुई वहां की भारतीय मूल की प्रधानमंत्री कमला प्रसाद से, जिन्होंने गर्व साहित यह तथ्य साझा

कमला प्रसाद - जड़ों से जुड़ाव

किया गया कि उन्हें भारत में अपने पुरखों की जड़ों पर आज भी गर्व है। उन्हें स्वयं को अपमान स्वरूप कुली की बेटी कहे जाने पर कोई परेशानी या शर्मिंदगी भी महसूस नहीं होती, बल्कि इसके सर्वथा विपरीत इस बात पर गर्व की अनुभूति होती है कि एक अदना से कुली की लड़की आज इस देश की प्रधानमंत्री है।

उन्होंने इस अवसर आयोजित भव्य समारोह में आगे कहा कि डेढ़ शताब्दी पूर्व अंग्रेजों द्वारा धोखा देकर भारतीय मजदूरों को बंधक बनाकर नेल्सन द्वीप लाया गया था। वे अपने साथ केवल गीता, रामायण, कुरान लेकर आए थे। वे अंग्रेजी तक नहीं जानते थे, अनुबन्धों की शर्त तो दूर की बात। गिरमिटिया प्रथा अर्थात

मानव तस्करी से पीड़ित उस पीढ़ी ने अन्याय, अमानवीय जलालत सिर्फ इसलिये झेली ताकि वे इस धरती के सेवा करने के साथ ही साथ अपने बच्चों का भविष्य संवार सकें।

उन्होंने आगे बात जारी रखते हुए कहा मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि तब से आज तक 150 वर्षीय सम्बन्धों के प्रति प्रतिबद्धता निभाते हुए हमारे पूर्वजों ने प्राचीन भारतीय सभ्यता, भाषा, संस्कृति को आज तक यहां की धरती पर संरक्षित रखा हुआ है।

इस अवसर पर त्रिनिदाद एवं टोबैगो की विकास यात्रा के संपूर्ण इतिहास को संरक्षित रखने के लिये जनमानस के परामर्श से नेल्सन द्वीप का नया नामकरण के प्रस्ताव का अनुमोदन भी किया गया।

ज्ञात रहे कि नेल्सन द्वीप यहां के 5 द्वीपों में से एक है, जिसे 1861 से 1917 तक गिरमिटिया प्रवासियों के लिए एक लेंडिंग, इमिग्रेशन तथा क्वारंटाइन स्टेशन हेतु उपयोग किया गया। नया नाम तथा स्मारक जुल्म से कामयाबी की यात्रा का प्रतीक होने के साथ ही विदेशी धरती पर भारत की विजय का प्रतीक।

निष्कर्ष – मित्रों यही वह देश प्रेम का भाव है जिसकी गूंज सात समंदर पार सुनाई देती है एक स्वर में, किंतु अपने यहां खंडित स्वरूप में। देशभक्ति और ईमानदारी के अभाव में हम आज भी मंथर गति से ही चल पा रहे हैं। काश देश के प्रति श्रद्धा का भाव उसी शिद्दत से हमारी शिराओं में प्रवाहित हो सके तो आनेवाली पीढियां हम पर गर्व करेंगी, वरना शर्मिंदगी के सारे सूत्र तो आज अधिक उपलब्ध हैं।

न मजहब की दीवारें न रंग-ओ-नस्ल
का जिक्र हर वतनपरस्त को हो बस वतन
की फिक्र

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

भारतीय कला, टैगोर परिवार एवं जोरासाँको

हमारा देश भारत तमाम नये-नये समस्याओं से रोज दो-चार हो रहा था। किसान, सिपाही, जमींदार सभी रोज बनते नये कानूनों से परेशान थे ऐसी स्थिति में कला किस हालत में रही होगी सहज ही समझा जा सकता है। उसके बाद 1857 और उसके बाद का यह वही समय था जब भारत संपन्न होने के बावजूद लुटेरों की वजह से विपन्नावस्था को प्राप्त हो चुका था, हाँ आप चाहे जो भी कहें पर मैं तो उन्हें लुटेरा ही कहूँगा। तड़प रहा था भारत विदेशियों के चंगुल में। हालांकि 57 के विद्रोह के बाद सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासनिक लगभग सभी स्तरों पर भारी स्थिति में परिवर्तन होने लगे थे। भारतीय धर्म में हस्तक्षेप से बचने तथा भारतीय राजाओं की रियासतों के सुरक्षित होने की बातें भी सामने आई पर प्रशासनिक स्तर पर अधिक कठोरता के प्रावधान भी बनें।

भारतीय मायनों में तब का समय बहुत अच्छा नहीं था। प्राकृतिक धरोहरें, कल-कल करती नदियाँ, ऊपर-नीचे तैरते-उतराते पहाड़, पहाड़ों के सर्पीले राहों में सहभागी बनीं हरी-भरी घासों का साथ तब भी था, हवा तब भी थी पर सुकून, खुली हवा का स्वच्छंद साँस संभव नहीं था। राजाओं, नवाबों, स्थानीय शासकों की स्वतंत्रता, ताकत धीरे-धीरे छिनती जा रही थी, कइयों ने कंपनी के साथ बातचीत भी करी पर जैसा कि हमेशा से रहा है कि अत्यधिक बल, अहम मनुष्य को अंधा बना देता है यहाँ भी ऐसा ही हुआ। हमारा देश भारत तमाम नये-नये समस्याओं से रोज दो-चार हो रहा था। किसान, सिपाही, जमींदार सभी रोज बनते नये कानूनों से परेशान थे ऐसी स्थिति में कला किस हालत में रही होगी सहज ही समझा जा सकता है। उसके बाद 1857 और उसके बाद का यह वही समय था जब भारत संपन्न होने के बावजूद लुटेरों की वजह से विपन्नावस्था को प्राप्त हो चुका था, हाँ आप चाहे जो भी कहें पर मैं तो उन्हें लुटेरा ही कहूँगा। तड़प रहा था भारत विदेशियों के चंगुल में। हालांकि 57 के विद्रोह के बाद सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासनिक लगभग सभी स्तरों पर भारी स्थिति में परिवर्तन होने लगे थे। भारतीय धर्म में हस्तक्षेप से बचने तथा भारतीय राजाओं की रियासतों के सुरक्षित होने की बातें भी सामने आई पर प्रशासनिक स्तर पर अधिक कठोरता के प्रावधान भी बनें। उच्च पदों से भारतीय लगभग बाहर ही हो गये। सेना का पुनर्गठन हुआ, सेना में भारतीयों की संख्या घटी जबकि अंग्रेजों की संख्या बढ़ाई गई। बड़े हथियार केवल अंग्रेजों के अधीन रखने की बात पास हुई। सामाजिक, आर्थिक रूप से तो कमजोर कर ही दिया गया था सांस्कृतिक रूप से भी विपन्न करने की लगातार कोशिशें हुईं बाकी बचा-खुचा काम तो कला विद्यालय कर ही रहे थे। अंग्रेजी कलाकार जो लगातार भारतीय दौरे पर आते रहते थे और अपने फायदे को देखते हुए जगह-जगह जाकर कृतियों को बनाते रहते थे और मौका मिलते ही भारतीय कला को नीचा दिखाने से भी नहीं चूकते थे। भारतीय कला जो बिना पंख के पक्षी की भांति तड़प रही थी, जिसको आगे बढ़ाने में पूरे देश में यदि कोई नाम दिख रहा था तो वो था राजा रवि वर्मा जी का..

खैर..बात और आगे की करते हैं और आते हैं जोरासाँको, जिसका नाम आते ही याद आता है कलकत्ता और टैगोर परिवार, हाँ वही कला, साहित्य एवं संस्कृति से संपन्न द्वारकानाथ टैगोर, देवेंद्रनाथ टैगोर, रवींद्रनाथ टैगोर तथा अवनींद्रनाथ टैगोर का परिवार। यहाँ का रहन-सहन तमाम झँझावातों के बावजूद भी सांस्कृतिक परिवेश में समृद्ध था, जहाँ संयुक्त परिवार का चलन, विशाल हवेली, विशाल आँगन, दीवारों पर कलाकृतियाँ, पुस्तकालय, पूजा कक्ष, वैचारिक चर्चाओं का सम्पन्न परिवेश था। यह जगह भारतीय नवजागरण का केंद्र भी था। यहाँ बच्चों को भी स्वतंत्र वैचारिक परिवेश में रखा जाता था। कवि, लेखक, दार्शनिक, समाज-सुधारक लगभग सभी विधाएँ यहाँ हरहमेश जीवंत रहती थीं। हम आज वहीं की बात करेंगे और करेंगे रवींद्रनाथ के भतीजे, गिरींद्र नाथ के पोते एवं गुणेंद्रनाथ तथा सौदामिनी टैगोर के पुत्र अवनींद्रनाथ टैगोर की जिन्होंने भारतीय कला को एक अलग एवं सम्पन्न मुकाम तक पहुँचाया। पिता की भी इन सभी चीजों में गहरी रुचि थी।

समय 1870 के आसपास का है, जोरासाँको में सुबह की हल्की धूप, संकरी गलियों में पेड़-पौधों, खिड़कियों आदि से छनकर धीरे-धीरे उतर और तैर रही थी। चारों ओर अद्भुत सा दृश्य, प्रकाश एवं छाया के खेल प्रकृति के साथ मिलकर एक अनोखे दुनिया के दर्शन कराने से लग रहे थे। कच्ची-पक्की सड़कों पर चहलकदमियों के भव्य नजारे थे, लोग धोती-कुर्ता, उत्तरीय, जैसे कपड़ों में अपने-अपने कामों में लगे हुए थे। महिलाएं हल्के रंग की साड़ियों में बड़ी ही शालीन एवं अदब के साथ अपने में मशगूल थीं। पास से ही खेत-खलिहान, नहरों से अपनी महक और छाप लिए हवाएँ इधर से उधर मगन हो घूम रही थीं, झूम रहे थे लोग। कहीं पूजा-पाठ, घंटियों, शंखों की ध्वनि तो कहीं मंत्रोच्चार होते संस्कृत के मंत्र एवं बांग्ला में प्रार्थना का पाठ तो कहीं शिक्षा का अलख जगाता बड़ा सा विद्या केंद्र। आँगनों में तुलसी का पौधा और वहाँ का पूजा-पाठ भी भव्य था। बात अब ठाकुरबाड़ी की.., ठाकुरबाड़ी जहाँ बड़े हवेलीनुमा घर, बड़ा आँगन, बरामदे और ऊँची छतें थीं, जहाँ किसी एक कमरे में वेद-उपनिषद, धर्म-ग्रंथों का अध्ययन होता था तो दूसरे में तबला, सितार, पियानों की मधुर-मधुर धुनों के बीच अभ्यास में मस्त कोई बालक तो वहीं किसी और कमरें में नाटकों पर रिहर्सल करते लोग। एक ही आँगन में अलग-अलग विधानों का लाजवाब संयोजन था यहाँ। भारतीय और युरोपीय के बीच एक पुल सा रहा यह स्थल। दीवारों पर बढ़िया फ्रेम किए चित्र तो किताब और लैंप रखने हेतु डियउटियाँ या आलमारियाँ शोभा थीं यहाँ की। बालक बड़े-बड़े झरोखों से जब बाहर देखते थे तो एक अलग ही लोक नजर आता था, जिसे बड़ा अच्छा तो नहीं कहा जा सकता था कारण गोरों की छाप बाहर किसी न किसी रूप में नजर आ ही जाती थी। घोड़ा-गाड़ी, सिपाही, फकीर तो कहीं साधू। दिन बिल्कुल चहल-पहल के बीच बीत रहा होता था तो शाम और रात भी कुछ कम नहीं थी। घरों को लौटते लोग, चेहरों पर थकान और उदासियाँ साथ लिए लौटते थे। गाय-गोरुओं का रम्भाना तो पक्षियों का अपने घोंसले को लौटना भी वातावरण को बड़ा ही सुहावना बना दे रहा था। रवींद्रनाथ टैगोर उस समय लगभग दस वर्ष के थे जब उनके भतीजे अवनीन्द्रनाथ का जन्म हुआ, तिथि 7 अगस्त 1871 थी और उसी दिन कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव पूरे देश में मनाया जा रहा था।

घर में भारतीय परंपरा एवं आधुनिक विचारों का सुंदर संगम पहले से ही था। परिवार में वेद, पुराण जैसे धार्मिक ग्रंथों पर भी खूब अध्ययन और चर्चा होती थी साथ ही पाश्चात्य शिक्षा और विचारों पर भी सहमति, असहमति जैसी स्थिति हमेशा बनती बिगड़ती रहती थी और ऐसे सहमति तथा असहमति के बीच पलते-बढ़ते नन्हें बालक अवनीन्द्रनाथ के अंदर भी भारतीयता का बीज पनपा जो आगे चलकर इनको कला में भारतीय परंपरा पर काफी कुछ करने को प्रेरित किया। हालांकि यह वही समय था जब कला पर भी अंग्रेजियत थोपने की लगातार कोशिशें हो रही थीं और भारतीय छात्र जो कला में रुचि ले रहे थे, अपने कला में अंग्रेजी प्रभाव पा कर खुश थे। शैली, भाव, विचार सभी पर उन्हीं का प्रभाव था और कला पर यह प्रभाव प्राप्त कर लेने वाले खुद को संपन्न कलाकार मान बैठते थे। उधर पाश्चात्य विचारकों द्वारा भारतीय प्रभाव को कमतर आंकने का प्रयास लगातार जारी था। अवनींद्रनाथ जी जो बचपन से ही कला को लेकर सजग थे, फूल, पत्ती, जीव, जन्तु, रहन-सहन में प्रकृति की उपयोगिता पर बारीकी से नजर रख रहे थे। बहुत ही कम उम्र में उन्होंने ऐसे-ऐसे रेखांकन बना डाले थे कि लोग देखकर दंग हो जाते थे। संस्कृत में खूब अध्ययन करने वाले अवनी का आगे चलकर दाखिला कलकत्ता स्कूल आफ आर्ट में हो गया जहाँ इतालवी चित्रकार सिग्नोर गिल्हार्डी से पेस्टल रंग, जल रंग, लाइफ स्टडी सहित और भी कला की बारीकियाँ सीखीं। चित्र गूगल से साभार।

विचार

संदीप राशिनकर

लेखक पत्रकार हैं।

कला को दीवान- ए- खास नहीं दीवान- ए-आम बनाने की दरकार है

ईश्वर जिसे सृष्टि निर्माता के साथ सर्वश्रेष्ठ कलाकार कहा जाता है , उसने भी अपनी सृष्टि निहित कला , रंगों, रूपों , आकारों को बिना किसी वर्गभेद के सबके देखने ,अनुभूत करने के लिए स्वतंत्र रखा है , तो फिर क्या कारण है कि हमारा कलाकर्म मात्र किसी वर्ग विशेष की बपौति बन सोने के पिंजरे में इठलाए ! यह आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है कि मनुष्य जीवन को सफल एवं सुंदर बनाने वाली कलाएं जन जन के जीवन की हमराह बन परिवेश को सौंदर्य बोध से सुरभित करें । अभिव्यक्ति का पुरातन एवं सशक्त माध्यम चित्रकला जहां प्रयोगवादिता के नाम पर चिंतनहीन , कथ्यविहीन होते हुए अनाभिव्यक्ति का शिकार हो आम मानस से दूर होती जा रही है , वहीं वह बाजार के सम्मोहन में सृजित हो पूंजीपतियों के दिवानखानों या कॉरपोरेट ऑफिसों में कैद होती जा रही है ।

हमारे जीवन और संस्कृति में कला , साहित्य एवं संगीत के अहम अवदान ने ही मानव को आज विकास के इस पायदान पर खड़ा किया है। सम्प्रेषण व अभिव्यक्ति की माध्यम ये कलाएं जो आम मानस के सुख- दुख के क्षणों में उसके साथ हुआ करती थीं , वे यकायक आम मानस से यूं छिटककर बेगानी होते हुए वर्ग विशेष या ' खास ' तक क्यूं सिमट गई ? 'आम' की सहचर/सहोदर ये कलाएं धीरे- धीरे आम से दूर अभिजात्य बनते हुए 'खास' की क्यों हो गई ? निश्चित ही कला से सरोकार रखने वालों के लिए यह स्थिति चिंतनीय होने के साथ साथ विचारणीय भी होनी चाहिए ! ईश्वर जिसे सृष्टि निर्माता के साथ सर्वश्रेष्ठ कलाकार कहा जाता है , उसने भी अपनी सृष्टि निहित कला , रंगों, रूपों , आकारों को बिना किसी वर्गभेद के सबके देखने ,अनुभूत करने के लिए स्वतंत्र रखा है , तो फिर क्या कारण है कि हमारा कलाकर्म मात्र किसी वर्ग विशेष की बपौति बन सोने के पिंजरे में इठलाए ! यह आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है कि मनुष्य जीवन को सफल एवं सुंदर बनाने वाली कलाएं जन जन के जीवन की हमराह बन परिवेश को सौंदर्य बोध से सुरभित करें । अभिव्यक्ति का पुरातन एवं सशक्त माध्यम चित्रकला जहां प्रयोगवादिता के नाम पर चिंतनहीन , कथ्यविहीन होते हुए अनाभिव्यक्ति का शिकार हो आम मानस से दूर होती जा रही है , वहीं वह बाजार के सम्मोहन में सृजित हो पूंजीपतियों के दिवानखानों या कॉरपोरेट ऑफिसों में कैद होती जा रही है।

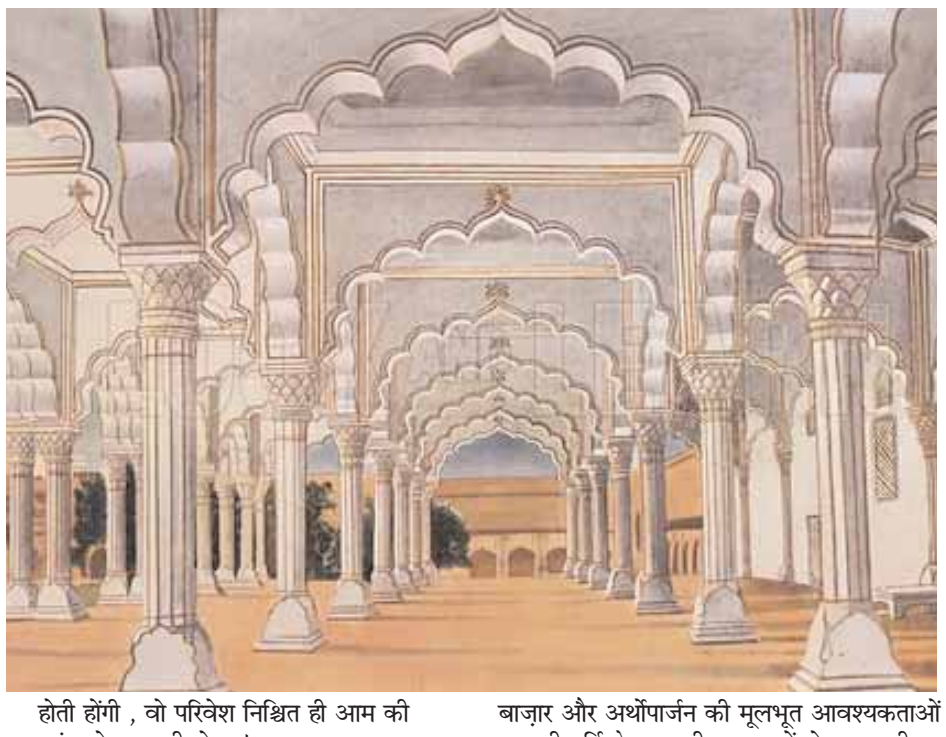

सहज ही सोचा जा सकता है कि करोड़ो में खरीदी जानेवाली कलाकृतियां जिस परिवेश में प्रदर्शित होती होंगी , वो परिवेश निश्चित ही आम की पहुंच से बाहर ही होगा !

बाज़ार और अर्थोपार्जन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ ही कलाकारों से यह गम्भीर चिंतन भी आवश्यक है कि कला को लोगों के बीच लाने के लिए क्या किया जाना चाहिए।

कला जब तक लोकमानस में पैठ बनाते हुए उसमें रच- बस न जाए तब तक न तो वह दीर्घ प्रभावी / दीर्घजीवी रह पाएगी और न ही वह अभिव्यक्ति के अपने मूलतत्त्व से न्याय कर पाएगी।

रचनात्मकता और सौंदर्य बोध का जनमानस में अभ्युदय ही विध्वंस और विकृति के खिलाफ एक कारगर हथियार है। ये ही वे तत्व हैं जो बंधुत्व , प्रेम व सहकारिता से मानव जीवन / मानवता को और बेहतर बनाने में उपयोगी हो सकते हैं । कला को कला वीथिकाओं से बाहर निकालकर उसे लोक जीवन में शामिल किया जाना आज की अहम आवश्यकता है।

सार्वजनिक जगहों पर कला के स्थायी / अस्थायी निरन्तर प्रदर्शनों से अपेक्षित कला वातावरण के निर्माण के साथ ही जनमानस में कला अभिरुचि के संवर्धन का मार्ग प्रशस्त होगा। चित्रों की दुरूहता को तोड़ते हुए आम मानस को भी कला में किए जा रहे प्रयोगों / बिम्बों से परिचित कराने के मुहावरों को भी कलाकारों को गढ़ना होगा । इससे आम मानस की कला के प्रति झिझक भी टूटेगी और वो भी कला की विकास यात्रा में कलाकारों के साथ हमकदम हो सकेगा ।

यह साफ तौर पर स्वीकारना होगा कि कला और उसके रचनात्मक मूल्यों को सहेजने व संवर्धित करने की अहम शर्त है कि कला जनमानस में न सिर्फ पैठ बनाएं , बल्कि उसके मन में सहज आत्मीयता के भाव भी जागृत करें । बाजारू हथकंडों से कलाकृतियों के ऊंचे दाम तो हासिल किए जा सकते हैं , किंतु उसे जनमानस में लोकप्रिय नहीं बनाया जा सकता । कलाकारों का दायित्व है कि कला को दीवाने खास से निकालकर उसे दीवाने आम की पसंद बनाने का प्रयास करें , जिससे जीवन के सौंदर्यबोध का यह अनिवार्य पहलू सिर्फ वर्ग विशेष की जागीर बनकर न रह जाए । वह कला जो कलाकारों की रचनात्मक एवं आर्थिक आवश्यकताओं का समाधान करती है , उस कला के शाश्वत मूल्यों एवं उसके संवर्धन के लिए कलाकारों से ही सार्थक प्रयास अपेक्षित है। अपेक्षित है उनसे ऐसा वाजिब संतुलन जिससे वे कलान्तर्गत रचनात्मकता के साथ ही कला के सामाजिक व्यापकीकरण व संवर्द्धन की अहम शर्तों को भी पूरा कर सकें ! जय हो .....

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।

टाइटन ब्राण्ड घड़ी की कहानी वेब सीरीज की जुबानी

शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय, उद्यमिता और अन्यान्य पेशेवर एवम् गैर-पेशेवर क्षेत्रों की सेलेब्रिटी पर आत्मकथात्मक (बायोपिक) फिल्म या वेबसिरीज़ बनाये जाने की एक स्वस्थ और शिक्षाप्रद परम्परा रही है मगर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी उपभोक्ता सामग्री के ब्रॉड पर केन्द्रित कोई फिल्म अथवा वेबसिरीज शायद ही बनी हो । इस दिशा में एक सार्थक और पुरअसर कोशिश की है प्रभजीत संधू ने जिन्होंने करण व्यास की कहानी पर रोबी ग्रेवाल के निर्देशन में ओटीटी पर एक वेबसिरीज़ बनाई है - 'मेड इन इंडिया - द टाइटन स्टोरी'।

हमारे देश में कुछ ब्राण्ड ऐसे हुए हैं जो सिर्फ ब्राण्ड नहीं रहे, बल्कि उन चीजों की पहचान बन गए । ऐसा ही एक ब्राण्ड है टाटा का टाइटन, यह सिरीज आपको इस ब्राण्ड के बनने की कहानी बताती है और इस तरह से बताती है कि आप समझते हैं कि बड़े बड़े ब्राण्ड यूँ ही नहीं बन जाते। उनके पीछे किस तरह की मेहनत, किस तरह के एक्सपर्ट्स सालों साल लगे रहते हैं। ये कहानी आपको काफी कुछ सिखा कर जाएगी, काफी कुछ देकर जाएगी और आपको एक नया हौसला भी देगी ।

नसीरुद्दीन शाह और जिम सर्भ अभिनीत यह वेब सिरीज गत 03 जून को ओटीटी पर रिलीज हुई । एक वक्त था जब जेआरडी टाटा से विदेश में किसी ने कह दिया था कि इंडियन्स घड़ियां नहीं बना सकते, बस ये बात उनके दिल पर लग गई और उन्होंने सोचा कि वो सिर्फ हिंदुस्तान की नहीं बल्कि दुनिया की सबसे अच्छी घड़ी बनाएंगे । लेकिन सोचने और करने में फर्क होता है, सपने देखने और सपनों को सच करने के बीच की जो दूरी होती है वो आसान नहीं होती। ये सीरीज उसी दूरी को तय करती है और जिस तरह से करती है वो काबिले तारीफ है ।

कहानी की शुरुआत टाटा ग्रुप के भीतर नए कारोबार की तलाश से होती है। टाटा प्रेस घाटे में है और ग्रुप को नए रास्ते खोजने हैं। इसी दौरान जेरक्सिस देसाई (जिम सर्भ) एक ऐसा प्रस्ताव लेकर आते हैं, जो सुनने में जितना अच्छा लगता है, उतना ही जोखिम भरा भी है।भारत में ऐसी घड़ियां बनाना जो विदेशी ब्रांड्स को टक्कर दे सकें, उस दौर में आसान बात नहीं थी। जेरक्सिस के इस सपने को सबसे पहले समझते हैं जहांगीर रतनजी दादाभाई टाटा (नसीरुद्दीन शाह) जब कई लोग इस प्लान को लेकर डाउट में हैं, तब जेआरडी टाटा उनके साथ खड़े नजर आते हैं।अब आगे इस सफर में जेरक्सिस की पत्नी (नमिता दुबे) भी अहम भूमिका निभाती हैं। वहीं मस्तान भाई (राहुल देव) के जरिए विदेशी घड़ियों की तस्करी वाली दुनिया की झलक भी देखने को मिलती है।

यह सिरीज़ अभिनय के नजरिए से जबर्दस्त है। जिम सर्भ इस सिरीज की सबसे बड़ी ताकत हैं। जेरक्सिस देसाई के किरदार में उन्होंने ऐसा काम किया है जो लम्बे समय तक याद रहेगा। उनकी एक्टिंग की सबसे अच्छी बात यह है कि वह चरित्र को हीरो बनाने की कोशिश नहीं करते। वह उसे इंसान बनाए रखते हैं। कई बार सिर्फ चेहरे के भाव ही बहुत कुछ कह जाते हैं। नसीरुद्दीन शाह ने जेआरडी टाटा को किसी बड़े बिजनेसमैन की तरह नहीं, बल्कि ऐसे व्यक्ति की तरह निभाया है जो लोगों और उनके विचारों पर भरोसा करना जानता है। यही बात उनके चरित्र को खास बनाती है। नमिता दुबे, वैभव तत्त्ववादी, जॉय सेनगुप्ता और कावेरी सेठ जैसे एक्टर्स ने सिरीज को मजबूत सहारा दिया है। खास तौर पर वैभव तत्त्ववादी, जेरक्सिस के दोस्त आकाश बंसल के रोल में खूब जँचते हैं। दोनों की दोस्ती कहानी में कई जगह गर्माहट लेकर आती है। राहुल देव का रोल छोटा है, लेकिन मस्तान भाई के रूप में वह अपनी छाप छोड़ जाते हैं।

निर्देशन भी उत्कृष्ट है क्योंकि निर्देशक ने एक ऐसी कहानी को रोचक बनाए रखा है जिसमें न कोई बड़ा विलेन है, न गोलीबारी है और न ही कोई सनसनीखेज मोड़। अस्सी के दशक का माहौल बनाने में मेकर्स ने काफी मेहनत की है। पुराने ऑफिस, फैक्ट्री, मशीनें, सरकारी फाइलें और उस दौर का वर्क कल्चर कहानी को रियल बनाते हैं। खास बात यह है कि सीरीज में जगह-जगह उस समय के असली फुटेज भी इस्तेमाल किए गए हैं। इससे कहानी और उस दौर के बीच का फासला कम हो जाता है। कई सीन डॉक्यूमेंट्री और ड्रामा के बीच का दिलचस्प बैलेंस बनाते हैं।

सिरीज का लेखन इसकी मजबूत कड़ी है। कहानी धीरे-धीरे आगे बढ़ती है और हर एपिसोड टाइटन की जर्नी का नया अध्याय खोलता है। सबसे अच्छी बात यह है कि यहां बिजनेस की बातें भी आसान लगती हैं। फैक्ट्री लगाने, ब्रांड बनाने, मार्केटिंग करने और कस्टमर्स का भरोसा जीतने जैसी बातें बोझिल नहीं लगतीं। हालांकि बीच के कुछ हिस्सों में रफ्तार धीमी पड़ती है। खासकर बीच के एपिसोड थोड़ा और कसाव माँगते हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस पर पलकमती नदी में श्रमदान करके की सफाई

सोहागपुर। पर्यावरण दिवस के अवसर पर मध्य प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर एवं प्रधान जिला सत्र न्यायाधीश महोदय के निर्देशानुसार , तहसील विधिक सेवा समिति अध्यक्ष एवं प्रथम जिला अपर सत्र न्यायाधीश श्री अतुल सक्सेना सोहागपुर के मार्गदर्शन में प्राचीन पलकमति नदी की स्वच्छता एवं साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया । जनअभियान परिषद के सदस्यों ने भी स्वच्छता अभियान में सहयोग किया। इस अवसर गरिमामय कार्यक्रम में

प्रथम जिला अपर न्यायाधीश श्री अतुल सक्सेना, न्यायाधीश अपेक्षा यादव, अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी,नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष श्रीमती लता यशवंत पटेल, मुख्य नगर पालिका अधिकारी धर्मेंद्र शर्मा, ब्लाक अध्यक्ष अश्वनी सरोज, पार्षद रवि शंकर उइके, नगर परिषद के अमित परसाई, संजय पचौरी, हक्कूलाल परते,भूपेंद्र केवट,नीरज मलैया हरगोविंद व्यास,अनिल रघुवंशी, नरेंद्र धुर्वे,रणधीर रघुवंशी, राजेश रघुवंशी,दशरथ सरयाम संजय दोहरे,राज कुमार घारू,गौरव कुमार आदि कर्मचारियों ने पलकमती नदी की सफाई करके श्रमदान किया। इस प्राचीन पलकमती नदी की सफाई में अध्यक्ष अधिवक्ता संघ एवं कर्मचारी गण व जन भागीदारी में सहयोग किया।

इसी अवसर पर प्रथम जिला अपर न्यायाधीश श्री अतुल सक्सेना ने स्वच्छता का संदेश दिया। आपने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस पर पूरे भारत में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। इसी तारतम्य में प्राचीन पलकमती नदी की सफाई करके स्वच्छता का संदेश दिया।वहीं आयोजित आपने साक्षरता शिविर में सारगर्भित उद्बोधन दिया। इसी अवसर पर नगर पंचायत परिषद ने जेसीबी मशीन की मदद से भी पलकमती नदी पुल एवं पलकमती रपटे पर सफाई करके मलवा हटाया।

अटल अमृत उद्यान में 60 पौधारोपण करके दिया हरित संदेश

सोहागपुर। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर विकास का संदेश नगर परिषद सोहागपुर के तत्वावधान में अटल अमृत उद्यान में पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सिविल जज (सीनियर डिवीजन) सुश्री अपेक्षा यादव, नगर परिषद अध्यक्ष श्रीमती लता यशवंत पटेल, नगर परिषद उपाध्यक्ष आकाश रघुवंशी, मंडल अध्यक्ष अश्वनी सरोज, पार्षद गौरव पालीवाल, पार्षद आशीष

विश्वकर्मा , पार्षद रविशंकर उइके , पूर्व पार्षद श्री राकेश चौरसिया, श्रीमती अर्चना साहू, श्रीमती पुष्पा वर्मा, अभिनव पालीवाल, डालचंद साहू, चंद्रकांत रघुवंशी, शरद चौरसिया, ऋषभ गढ़वाल जनप्रतिनिधियों, गणमान्य नागरिकों एवं नगर पंचायत परिषद के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सहभागिता की निभाई। इस अवसर पर विभिन्न प्रजातियों के लगभग 60 पौधों का रोपण कर पर्यावरण संरक्षण एवं हरित विकास का संदेश दिया गया। कार्यक्रम में अतिथियों ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए नागरिकों से अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने एवं पौधों के संरक्षण का संकल्प लेने का आह्वान किया। नगर पंचायत परिषद के अधिकारियों ने पौधों की नियमित देखभाल एवं संरक्षण सुनिश्चित किए जाने की बात कही गई।

जिला भाजपा अध्यक्ष ने की विश्व पर्यावरण दिवस पर सोहागपुर में की पर्यावरण संगोष्ठी, जल संरक्षण वृक्षारोपण दिया संदेश

सोहागपुर। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर नगर विकास प्रस्फुटन समिति सोहागपुर के तत्वावधान में स्थानीय विश्राम गृह में पर्यावरण संगोष्ठी का आयोजन भाजपा जिलाध्यक्ष श्रीमती प्रीति शुक्ला की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस गरिमामय कार्यक्रम में जन अभियान परिषद के संभागीय प्रतिनिधि कौशलेश तिवारी एवं पवन सहगल विशेष रूप से उपस्थित थे। श्री कोशलेश तिवारी ने पर्यावरण संरक्षण में जनभागीदारी की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए नागरिकों से जल एवं हरित संसाधनों के संरक्षण करने में सहयोग की अपील की।कार्यक्रम में नवांकुर, मेंटर, नगर समिति के सदस्य, सामाजिक कार्यकर्ता एवं नगर के वरिष्ठ नागरिकों ने सहभागिता निभाकर पर्यावरण संरक्षण, जल संवर्धन एवं वृक्षारोपण के महत्व पर विचार-विमर्श किया। इस अवसर पर भाजपा मंडल अध्यक्ष अश्वनी सरोज, नगर विकास प्रस्फुटन समिति के अध्यक्ष अभिनव पालीवाल, समिति सचिव ऋषभ गढ़वाल, पार्षद रवि उईके, अंकुश जायसवाल सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

डबरा में 50 लाख की लूट का खुलासा

फरियादी के भाई-भाभी और दो दोस्तों ने रची थी साजिश, नकदी और जेवर बरामद

डबरा (नप्र)। डबरा में दो दिन पहले हुई 50 लाख रुपए की लूट का खुलासा शनिवार को सिटी पुलिस ने कर दिया है। इस मामले में फरियादी के भाई, भाभी और उनके दो दोस्त आरोपी निकले हैं। पुलिस के अनुसार, आरोपियों ने पूरी योजना बनाकर इस घटना को अंजाम दिया था। तकनीकी साक्ष्य और सीसीटीवी फुटेज की मदद से पुलिस आरोपियों तक पहुंच पाई।

पुलिस ने आरोपियों के पास से लगभग 250 ग्राम सोना, 2 किलोग्राम चांदी और ढाई लाख रुपए नकद बरामद किए हैं। वारदात में इस्तेमाल की गई मोटरसाइकिल को भी जब्त कर लिया गया है।

पुलिस को बताई कहानी- आपको बता दें की 4 जून को डबरा की पिछोर रोड पर रहने वाली मोनिका श्रीवास्तव के घर पर लूट की वारदात हुई उस समय उनकी भाभी पिंकी श्रीवास्तव घर पर अकेली थी उसने जो कहानी बताई उसके अनुसार दो लोग ऐसी सर्विस करने का बहाना लेकर घर में आए उसके हाथ पैर बंधे मारपीट की और अलमारी में से सोना चांदी और लगभग 50 लाख रुपए का सामान लूट ले गए।

बड़ी लूट का मामला होने के चलते अधिकारी एक्टिव हुए हुए ग्रामीण एडिशनल एसपी जयराज कुबेर, एसडीओपी सौरभ कुमार,सिटी थाना प्रभारी संजय शर्मा लगातार सीसीटीवी खंगाल रहे थे।

सीसीटीवी फुटेज से बाइक तक पहुंची पुलिस

इस दौरान पिछोर रोड के यादव ढाबे के पास पीड़ित महिला द्वारा बताए गए हुलिया की बाइक जाती हुई दिखी। बस एक क्लू के बाद पुलिस लगातार सीसीटीवी से आरोपियों तक पहुंच रही थी तो दूसरी ओर पीड़ित महिला पिंकी की कहानी में गड़बड़ी नजर आ रही थी।

भाई को गिरफ्तारी से खुला राज

शक की सुई पिंकी के पति पर जाकर टिक गई। पुलिस ने पिंकी के पति शुभम श्रीवास्तव को गिरफ्त में लिया तो पहले तो वह पुलिस को गुमराह करता रहा। बाद में पुलिस की सख्ती के आगे टूट गया और उसने अपने मित्र सोनू कौशिक निवासी ग्वालियर के साथ वारदात करना स्वीकार कर लिया।

दोस्त के घर छुपाया था माल

लूट गया जेवर ग्वालियर में तारागंज निवासी आसिफ खान के घर पर रख छुपा दिया गया था। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से लगभग 46 लाख के सोने-चांदी के जेवरात और ढाई लाख रुपए नकदी और बाइक बरामद की है।

कार्रवाई में उप निरीक्षक प्रशांत शर्मा, प्रधान आरक्षक शिवशांत पांडे,अविनाश पटसरिया, दिनेश सिंह,शिवम पाल,दीपक रावत,मिंटू परिहार, विनोद रावत सहित क्राइम ब्रांच की टीम की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

भोपाल के रायसेन रोड से हटाईं 70 दुकानें-42 झुग्गियां

सड़क चौड़ीकरण के लिए प्रशासन की कार्रवाई जमीन का बाजार मूल्य 40 करोड़

भोपाल (नप्र)। भोपाल के रायसेन रोड के चौड़ीकरण के लिए शनिवार को जिला प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई की। यहां से 70 दुकानें और 42 झुग्गियां हटाई गईं। प्रशासन के अनुसार, जिस जमीन से कब्जा हटाया, उसका बाजार मूल्य 40 करोड़ रुपए से ज्यादा है। इधर, कांग्रेसियों ने लोगों के पुर्नवास की मांग की। कई कांग्रेसी मौके पर पहुंचे। एसडीएम भुवन गुप्ता, तहसीलदार सौरभ वर्मा की मौजूदगी में

यह कार्रवाई हुई। एसडीएम गुप्ता ने बताया, पिपलानी चमारन स्थित लेबर कॉलोनी झुग्गी बस्ती में ग्लोबल स्किल पार्क के सामने स्थित 70 दुकानें एवं 42 झुग्गीवासियों ने सड़क पर अवैध कब्जा कर रखा था। जिसे हटाने के लिए आज सुबह से कार्रवाई शुरू की गई। दोपहर तक प्रशासन, पुलिस और नगर निगम के अमले के साथ कार्रवाई कर दी।

जमीन की इतनी कीमत- प्रशासन के अनुसार, मौके पर 210 मीटर पीडब्लूडी सड़क के दोनों ओर करीब 4 हजार वर्ग मीटर यानी, 43 हजार वर्गफीट जमीन की कीमत करीब 40 करोड़ रुपए है। इसी जमीन पर लंबे समय से कब्जा था। जिसे अतिक्रमण से मुक्त कराया गया। यहां पर पीडब्ल्यूडी फोरलेन सड़क और ब्रिज का निर्माण कराएगा।

कांग्रेसियों ने कार्रवाई का विरोध जताया- प्रशासन का कहना है कि सड़क चौड़ीकरण और यातायात व्यवस्था को सुगम बनाने के उद्देश्य से यह अभियान चलाया गया। वहीं, इस कार्रवाई को लेकर स्थानीय लोगों और कांग्रेस नेताओं ने विरोध दर्ज कराया।कांग्रेस का आरोप है कि प्रभावित परिवारों और दुकानदारों को पर्याप्त सूचना दिए बिना उनके मकान और दुकानें तोड़ी गई हैं।

जबलपुर में 1.37 करोड़ का गेहूं घोटाला

5167 क्विंटल अनाज गायब; केंद्र प्रभारी समेत 10 लोगों पर एफआईआर दर्ज

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में एक करोड़ रुपए से अधिक के गेहूं घोटाले का खुलासा हुआ है। प्रशासनिक जांच में खरीदी केंद्र प्रभारी, सहायक खाद्य अधिकारी सहित 10 लोगों की भूमिका सामने आने के बाद सभी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई गई है। मामला मझौली स्थित मां अन्नपूर्णा वेयरहाउस का है, जहां जांच के दौरान 5167.70 क्विंटल गेहूं कम मिला। गायब गेहूं की कीमत करीब 1 करोड़ 37 लाख रुपए आंकी गई है। जांच में किसानों से अवैध वसूली किए जाने का मामला भी सामने आया है।

औचक निरीक्षण में मिला था अंतर- जानकारी के अनुसार कुछ दिन पहले प्रशासन की टीम ने अचानक मां अन्नपूर्णा वेयरहाउस में निरीक्षण किया था। जांच के दौरान रिकॉर्ड और वास्तविक स्टॉक में बड़ा अंतर मिला। स्टेट सिविल सप्लाइज कॉर्पोरेशन द्वारा 92,250 बारदाने उपलब्ध कराए गए थे, जबकि खरीदी केंद्र में 48,347 क्विंटल गेहूं के हिसाब से ही बारदानों का उपयोग पाया गया। इसके विपरीत पोर्टल पर 96,694 बारदाने अपलोड किए गए थे।

जांच में यह भी सामने आया कि एसडीएम ने खरीदी केंद्र प्रभारी को निर्देश दिए थे कि खरीदी के अंतिम दिनों में किसानों की तौल पर्चियों में दर्ज जानकारी को नोडल अधिकारी से प्रमाणित कराया जाए, लेकिन इस प्रक्रिया का पालन नहीं किया गया। आशंका जताई जा रही है कि फर्जी एंट्री करने के उद्देश्य से नियमों की अनदेखी की गई।

ग्राम रेनीपानी में शासकीय भूमि अतिक्रमण मुक्त , वन विभाग को सौंपी, राजस्व विभाग की महती भूमिका

सोहागपुर। सोहागपुर विधानसभा के आदिवासी ग्राम ग्राम रेनीपानी में शासकीय भूमियों पर भू-माफियाओं एवं अवैध कब्जा कर रखा था। कलेक्टर सोमेश मिश्रा नर्मदापुरम के निर्देश पर सोहागपुर राजस्व विभाग की टीम ने उक्त शासकीय भूमि पर कब्जा मुक्त कराने के अभियान में बड़ी सफलता हासिल की है। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर महोदय के सख्त दिशा-निर्देशों एवं आदेशानुसार, ग्राम रेनीपानी में सरकारी जमीन पर बाहर से आए परिवारों ने अवैध अतिक्रमण कर लिया था।इस अतिक्रमण को पूरी तरह से हटा दिया गया है। अतिक्रमण की बेशकीमती भूमि से तत्काल हटाकर वन विभाग को हस्तांतरित कर दिया गया है।

सराहनीय भूमिका – सोहागपुर राजस्व टीम की रही महत्वपूर्ण और सराहनीय भूमिका रही । जिसमें कलेक्टर महोदय के आदेश का अक्षरशः पालन किया गया। जिसमें स्थानीय राजस्व टीम की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही। राजस्व अमले ने बेहद सूझबूझ और मुस्तैदी के साथ मौके पर पहुँचकर स्थिति को संभाला और पूरी कार्रवाई को सफलता पूर्वक अंजाम दिया।इस संयुक्त टीम का नेतृत्व अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी,तहसीलदार राम किशोर झरबडे ,नायब तहसीलदार रंजीत चौहान ने किया था। इस संयुक्त टीम में राजस्व अमले के साथ वन विभाग एवं पर्यटन विभाग की संयुक्त टीम ने ग्राम रेनीपानी में मोर्चा संभालाज्ञथा। उल्लेखनीय है कि यहाँ अन्य ग्रामों से आए लगभग 5 परिवारों ने शासकीय भूमि पर अवैध रूप से कब्जा कर निर्माण कर लिया था। इस अतिक्रमण को प्रशासनिक अधिकारी और संयुक्त टीम की उपस्थिति में जेसीबी मशीन से अवैध ढांचों को हटाने की त्वरित कार्रवाई की गई।वन विभाग को सौंपी जमीन प्रशासनिक अधिकारियों को कलेक्टर महोदय के स्पष्ट आदेश थे। कि जमीन को अतिक्रमण मुक्त कराने के तुरंत बाद उसे संरक्षण एवं प्रबंधन के लिए वन विभाग के सुपुर्द किया जाए। मौके पर ही राजस्व टीम की मौजूदगी में जमीन का हस्तांतरण वन विभाग को कर दिया गया है। ताकि भविष्य में दोबारा कोई अतिक्रमण न हो सके।

भारत विकास परिषद धार ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प

एसपी , सीईओ जिपं, सीएसपी, सहायक कलेक्टर ने की सहभागिता, 'एक पेड़ मां के नाम' थीम पर मोती वन में रोपे पौधे

धार। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भारत विकास परिषद शाखा धार द्वारा 'एक पेड़ मां के नाम' थीम पर भव्य पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। पुलिस लाइन, मांडू रोड स्थित मोती वन में परिषद् परिवार द्वारा 25 छायादार एवं फलदार पौधे रोपित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया।

मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक सचिन शर्मा, विशेष अतिथि मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अभिषेक जी चौधरी, सीएसपी सजावल जग्गा, सहायक कलेक्टर आशी शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति रही। परिषद् परिवार द्वारा सभी अतिथियों का पुष्पगुच्छ से आत्मीय स्वागत किया गया।

इस अवसर पर पर्यावरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले एवं पौधों को वर्ष भर पोषित कर देखरेख करने वाले पर्यावरणविद पीरू दादा का परिषद् द्वारा शाल, श्रीफल एवं पुष्पहार से सम्मान किया।

एसपी सचिन शर्मा ने भारत विकास परिषद की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि प्रशासन एवं समाजसेवी संस्थाओं का यह संयुक्त प्रयास धार जिले को हरा-भरा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। सीईओ जिला पंचायत अभिषेक चौधरी ने 'एक पेड़ मां के नाम' थीम को भावनात्मक एवं प्रेरणादायी बताया। रक्षित निरीक्षक एवं पर्यावरण प्रेमी पुरुषोत्तम बिश्नोई तथा पुलिसकर्मियों के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। परिषद् के क्षेत्रीय संयोजक पर्यावरण वीरेंद्र जैन ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण भारत विकास परिषद के 5 सूत्रों - सेवा और संस्कार का जीवंत रूप है।

इस अवसर पर प्रांतीय संयोजक संपर्क प्रकाश तिलक, शाखा अध्यक्ष मुरलीधर बूटे, वित्त सचिव गोपालदास गुप्ता , संयोजक संपर्क रवि महेश्वरी, संयोजक संस्कार हरीहरदत्त शुक्ल, संयोजक सेवा प्रकाश गुप्ता, संयोजक पर्यावरण लीलाधर दांदक, मीडिया प्रमुख रॉकी मक्कड़ एवं मातृशक्ति महिमा गुप्ता, प्रदीप जोशी, रवि जोशी, राजेंद्र चौहान सहित बड़ी संख्या में परिषद सदस्य एवं पुलिसकर्मी उपस्थित रहे। शाखा अध्यक्ष मुरलीधर बूटे ने बताया कि रोपित पौधों की सुरक्षा एवं देखभाल की जिम्मेदारी परिषद् सदस्य एवं पुलिस विभाग संयुक्त रूप से निभाएंगे।

फुटबॉल के विकास के लिए जिले में फुटबॉल लीग स्पर्धाओं का आयोजन किया जाए: अमित रंजन देव सचिव, एमपीएफए

धार। धार जिले में फुटबॉल प्रोत्साहन योजना अंतर्गत मध्यप्रदेश फुटबॉल संघ के सचिव अमित रंजन देव के मुख्य आतिथ्य में जिला फुटबाल संघ धार की बैठक आयोजित की गई। अध्यक्षता पुरुषोत्तम बिश्नोई आरआई धार द्वारा की गई। विशेष अतिथि डीएसओ राजेश शाक्य, अनिल प्लाजा संचालक शांताराम बंसोड़ और डीएफए लीगल एडवाइज़र एडवोकेट खालिद निसार थे।

डीएफए कार्यकारी अध्यक्ष शमशेर सिंह यादव ने अतिथि परिचय और स्वागत भाषण दिया । डीएफए सचिव सुभाष डेविड ने जिले के आठ मान्यता प्राप्त क्लबों की सूची सहित, फुटबॉल गतिविधियों और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतिभाओं के संबंध में प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। एमपीएफए सचिव अमित रंजन देव ने कहा कि जिले में प्रत्येक आयु वर्ग के लिए फुटबॉल लीग स्पर्धा आयोजित की जाए, पालकों को जागरूक कर प्रतिभाओं की खोज की जाए। ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन और मध्य प्रदेश फुटबॉल फेडरेशन से निर्धारित प्रक्रिया अंतर्गत वार्षिक पंजीयन कराया जाए। किसी भी अनाधिकृत स्पर्धा में भाग ना ले, प्रत्येक स्तर पर निर्धारित शुल्क जमा कर अनुमति प्राप्त करें। रैफरी परीक्षाओं में सहभागिता करें। फुटबॉल कोच के लिए लाइसेंस कोर्स करें । पुरुषोत्तम बिश्नोई ने कहा फुटबॉल विश्व का लोकप्रिय खेल है, एमपीएफए और डीएफए धार के प्रयास सराहनीय है। राजेश शाक्य ने कहा फुटबॉल के विकास के लिए खेल विभाग हमेशा सहयोग करने के लिए तत्पर है। शांताराम बंसोड़ ने कहा फुटबॉल टीम गेम है सामूहिक प्रयास से बेहतर परिणाम मिलेंगे। श्री खालिद निसार ने कहा विद्यालय स्तर पर फुटबॉल स्पर्धाएं आयोजित की जाए, फुटबॉल की लोकप्रियता के साथ खेलने के अवसर प्राप्त होंगे। इस अवसर पर रामचंद्र वर्मा (बदनावर), राजेश हरोड़ (टोनी), राजीव डेविड, सुंदर रायकवार,शैलेंद्र पाल (सरदारपुर), जिम्मी (मेघनगर), नीरज शर्मा, अमित शुक्ला, भादर सिंह पंवार,सचिन पाल, महेंद्र चौहान, मनोज चौहान, राहुल पाल, राजकुमार ठाकुर, उत्कर्ष डेविड,तरुण परमार, दुर्गेश वर्मा, कृष्णा सूजान, आशीष अम्लीयार भास्कर (सरदारपुर),एनोश मसीह उपस्थित थे।

संचालन शमशेर सिंह यादव द्वारा किया गया, आभार राजीव डेविड द्वारा माना गया।

मेरा युवा भारत द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प

धार। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत मेरा युवा भारत धार द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधारोपण अभियान का आयोजन किला परिसर, धार में किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा युवाओं को प्रकृति के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रेरित करना था। मुख्य अतिथि पुरुषोत्तम बिश्नोई आरआई उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों में आओ सहेजें धरा समिति से पिराग सिंह डावर, दिनेश मंडलोई किला संरक्षक , पूर्व सैनिक गुमानसिंह डावर शामिल रहे। अतिथियों ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया तथा उपस्थित युवाओं से अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनकी नियमित देखभाल करने का आह्वान किया। मेरा युवा भारत की जिला युवा अधिकारी दीर्घा राजावत विशेष रूप से उपस्थित रहीं। उन्होंने युवाओं को पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी गतिविधियों में निरंतर सहभागिता हेतु प्रेरित किया तथा विश्व पर्यावरण दिवस की थीम के अनुरूप हरित एवं स्वच्छ भविष्य के निर्माण का संकल्प दिलाया। युवाओं ने उत्साहपूर्वक पौधारोपण किया तथा पर्यावरण संरक्षण की शपथ ली। कार्यक्रम में मेरा युवा भारत के स्वयंसेवक, अमित भगोरे एवं पीटीएस सुमित उपस्थित रहे।

सुमन कल्याणपुर

एक और लता, नाम था सुमन!

भारतीय सुगम संगीत और पार्श्व गायन के स्वर्णिम इतिहास में कुछ आवाजें अपनी आंतरिक चमक, शास्त्रीय शुद्धता और अगाध गरिमा के कारण अमर हो चुकी हैं। इन्हीं आधारभूत स्वरों में एक नाम सुमन कल्याणपुर का है, जो किसी परिचय का मोहताज नहीं। साठ और सत्तर के दशक में हिंदी और मराठी फिल्म जगत को अपनी जादुई सुरीली आवाज से आलोकित करने वाली सुमन जी का जीवन आत्म-अनुशासन, संतोष और संगीत के प्रति अनन्य समर्पण का एक जीवंत प्रमाण है।

रविराज प्रणामी

सुमन कल्याणपुर की संगीतमय यात्रा किसी सोची-समझी महत्वाकांक्षा का परिणाम नहीं, बल्कि नियति का एक खूबसूरत मोड़ थी। ढाका में जन्मी सुमन जी का शुरुआती जीवन उनके परिवार के लगातार होते तबादलों के साए में बीता। उनके पिता शंकर राव हेमाडी 'सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया' में एक उच्च पद पर आसीन थे, जिसके कारण उनका स्थानांतरण पहले ढाका, फिर कलकत्ता और बाद में मुंबई हुआ। गिरगांव में उनके एक पड़ोसी ने पहली बार उनके कंठ की इस दुर्लभ प्रतिभा को पहचाना और उनके पिता से उन्हें औपचारिक संगीत शिक्षा दिलाने का आग्रह किया। इसके बाद उन्होंने पंडित केशवराव भोले के मार्गदर्शन में शास्त्रीय संगीत का कड़ा ककहरा सीखा। धीरे-धीरे तूलिका और कैनवास पृष्ठभूमि में चले गए और उनकी जिंदगी के फलक पर संगीत के सात सुर सजने लगे।

सिनेमा की दुनिया में उनका पहला कदम साल 1953 में मराठी फिल्म 'शाहीर परशुराम' से पड़ा। इसके तुरंत बाद, संगीत उस्ताद मोहम्मद शफ़ी ने उनकी प्रतिभा को भांपा और उन्हें हिंदी फिल्म 'मंगू' (1954) के लिए अनुबंधित किया, जिसमें उन्होंने बेहद भावुक गीत 'कोई पुकारे धीरे से तुझे' रिकॉर्ड किया। हालांकि, उन्हें वास्तविक पहचान और बड़ी सफलता फिल्म 'दरवाजा' (1954) से मिली, जिसका संगीत 'नाशाद' (दिग्गज नौशाद साहब नहीं) ने तैयार किया था। सुमन जी के गायन की सूक्ष्म बारीकियों को समझते हुए, उन्होंने उन्हें 'एक दिल दो बीमार' जैसे कालजयी गीत दिए, जिसने आगे की राह बेहद सुगम बना दी।

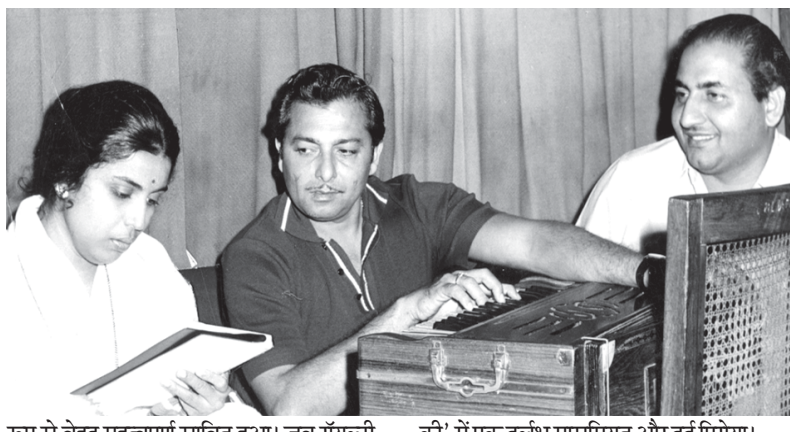

रूप से बेहद महत्वपूर्ण साबित हुआ। जब रॉयल्टी के विवाद को लेकर लता दीदी और मोहम्मद रफी साहब ने कुछ समय के लिए साथ गाना बंद कर दिया, तब रफी साहब के साथ युगल गीत गाने की बड़ी जिम्मेदारी सुमन कल्याणपुर के कंधों पर आई। इस काल में दोनों ने मिलकर सबसे अधिक (140) युगल गीत रिकॉर्ड किए। इनमें आजकल तेरे मेरे प्यार के चर्चे, ठहरिए होश में आ लूं और 'तुझे देखा तुझे चाहा' जैसे सदाबहार गीत शामिल हैं। हिंदी सिनेमा से इतर, मराठी संगीत सुमन जी की आत्मा और अस्तित्व की भाषा था। मराठी संगीत के पुरोधाओं जैसे बाबूजी (सुधीर फड़के), श्रीनिवास खाले और यहाँ तक कि लता के छोटे भाई हृदयनाथ मंगेशकर के साथ काम करना उनके लिए चुनौतीपूर्ण और बेहद संतोषजनक रहा।

संगीत के विविध रंग और यादें

सुमन कल्याणपुर को अपने दौर के लगभग हर दिग्गज संगीतकार के साथ काम करने का अवसर मिला। गजलों के बेताज बादशाह मदन मोहन जी एक बेहद सख्त उस्ताद थे, जो संगीत की सूक्ष्मताओं और शब्दों के सही उच्चारण को लेकर बेहद गंभीर रहते थे। फिल्म 'जहांआरा' में मदन जी के निर्देशन में गाया उनका गीत 'बाद मुद्दत के यह घड़ी आई' आज भी उनके दिल के सबसे करीब है। इसके विपरीत, रोशन साहब बेहद सौम्य और शालीन स्वभाव के थे। शुरुआती दिनों में सुमन जी ऐसे दिग्गजों के बीच थोड़ा घबरा जाती थीं, लेकिन रोशन साहब और शमशाद बेगम की ममतामयी गर्मजोशी ने लाइव रिकॉर्डिंग के कठिन सत्रों को भी आसान बना दिया। मुकेश के साथ भी उनकी बेहतरीन जुगलबंदी रही। उनके साथ गाए गीतों जैसे 'दिल तुझको दिया था' और 'मंज़िल वही है प्यार की' में एक दुर्लभ मासूमियत और दर्द पिरोया।

सिद्धांत, स्वाभिमान और विदाई

सुमन कल्याणपुर की विशाल डिस्कोग्राफी में, फिल्म 'शगुन' का गीत 'बुझा दिए हैं खुद अपने हाथों' अंतर्मुखी दर्द की एक अनूठी मिसाल है। खय्याम साहब द्वारा संगीतबद्ध और साहिर लुधियानवी द्वारा लिखित इस गीत में एक ऐसे सधे हुए भावनात्मक नियंत्रण की आवश्यकता थी जहाँ दर्द चिल्लाता नहीं, बल्कि भीतर ही भीतर घुटता है। रिकॉर्डिंग के बाद स्टूडियो में ऐसा सन्नाटा छा गया कि खय्याम साहब ने भावुक होकर कहा था कि सुमन ने साहिर के शब्दों को अमर कर दिया है।

मीडिया द्वारा बनाई गई प्रतिद्वंद्विता की खबरों के विपरीत, लता दीदी के साथ उनके संबंध हमेशा अत्यंत गरिमापूर्ण और आदरयुक्त रहे। फिल्म 'गोधूलि' (1979) के एक गीत में दोनों का साथ आना आपसी सम्मान और संगीत की पूर्णता के प्रति उनके साझा समर्पण का प्रतीक था। अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में जब उनसे पूछा गया कि वे अपने सफर को कैसे देखती हैं, तो उन्होंने मुस्कुराकर कहा था कि ईश्वर ने मुझे मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा दिया। ढाका से चली एक साधारण सी लड़की, जो जेजे स्कूल में पेंटिंग सीख रही थी, उसे ईश्वर ने करोड़ों दिलों की धड़कन बना दिया। संगीत ही मेरी प्रार्थना है, और यही मेरी संपूर्ण जिंदगी है।

तुलना का विरोधाभास

सुमन कल्याणपुर के करियर का एक स्थायी पहलू उनकी आवाज की तुलना संगीत की साक्षात देवी लता मंगेशकर से होना रहा। आलोचक और श्रोता भले ही इस पर बहस करते रहे कि यह तुलना उनके लिए वरदान थी या अभिशाप, लेकिन सुमन ने इसे हमेशा असीम शालीनता और एक मधुर मुस्कान के साथ स्वीकार किया। उनके लिए लता दीदी की आवाज सदियों में एक बार होने वाली दैवीय घटना थी, और ऐसी महान शख्सियत के साथ एक ही सांस में अपना नाम लिया जाना उनके लिए परम सौभाग्य और गौरव की बात थी।

यह स्वरों का साम्राज्य 1960 के दशक में, जो हिंदी फिल्म संगीत का स्वर्ण युग था ऐतिहासिक

रियल बॉक्स

वेब सीरीज में सिनेमा, टीवी से कहीं ज्यादा दम

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

एक समय था जब शुक्रवार का मतलब नई फिल्म हुआ करता था। सिनेमाघरों के बाहर लगी लंबी कतारें, टिकट खिड़की पर धक्का-मुक्की और किसी बड़े सितारे की फिल्म रिलीज होने पर शहर भर में दिखाई देने वाला उत्साह भारतीय मनोरंजन संस्कृति का हिस्सा था। फिर टेलीविजन आया और उसने मनोरंजन को घर के ड्राइंग रूम तक पहुंचा दिया। परिवार रात के खाने के बाद एक साथ बैठकर धारावाहिक देखते थे और अगले दिन मोहल्ले की बातचीत उन्हीं सीरियलों के इर्द-गिर्द घूमती थी। लेकिन अब तस्वीर बदल चुकी है। आज मनोरंजन न तो किसी सिनेमाघर का मोहताज है और न किसी टीवी चैनल के तय समय का। दर्शक की जेब में रखा स्मार्टफोन ही उसका निजी सिनेमाघर बन चुका है और इसी बदलाव का सबसे बड़ा चेहरा है वेब सीरीज।

कोरोना महामारी के दौरान जिस ओटीटी क्रांति की शुरुआत हुई थी, वह अब भारतीय मनोरंजन उद्योग की मुख्यधारा बन चुकी है। उस समय इसे मजबूरी का विकल्प माना गया था। सिनेमाघर बंद थे, टीवी उद्योग ठहरा हुआ था और दर्शकों के पास घरों में कैद रहने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। लेकिन छह साल बाद स्थिति यह है कि दर्शकों का एक बड़ा वर्ग अब ओटीटी को विकल्प नहीं, बल्कि प्राथमिकता मानता है।दरअसल, वेब सीरीज ने दर्शकों को वह स्वतंत्रता दी है, जो सिनेमा और टेलीविजन कभी नहीं दे पाए। दर्शक जब चाहे, जहां चाहे और जितना चाहे उतना कंटेंट देख सकता है। उसे किसी शो के प्रसारण समय का इंतजार नहीं करना पड़ता और न ही किसी फिल्म के लिए सिनेमाघर तक जाना पड़ता है। यही वजह है कि आज यात्रा करते हुए, ऑफिस के ब्रेक में, रात को सोने से पहले या सप्ताहांत में लगातार कई एपिसोड देखने की संस्कृति सामान्य हो चुकी है।

ओटीटी का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उसने कंटेंट को स्टार सिस्टम से काफी हद तक मुक्त कर दिया। हिंदी फिल्म उद्योग दशकों तक सितारों के इर्द-गिर्द घूमता रहा। फिल्मों की सफलता का पैमाना कहानी से ज्यादा अभिनेता हुआ करते थे। लेकिन वेब सीरीज ने यह समीकरण बदल दिया। आज दर्शक किसी प्रसिद्ध चेहरे की वजह से नहीं, बल्कि दमदार कहानी की वजह से किसी सीरीज को देखता है। यही कारण है कि कई नए कलाकार रातोंरात लोकप्रिय हुए और कई बड़े सितारों की महंगी परियोजनाएं दर्शकों पर प्रभाव छोड़ने में असफल रहीं। वेब सीरीज की सबसे बड़ी ताकत उसका विस्तार है। फिल्म को अपनी कहानी ढाई या तीन घंटे में समाप्त करनी होती है, जबकि वेब सीरीज के पास आठ, दस या बारह एपिसोड का समय होता है। इससे लेखक और निर्देशक को किरदारों को विकसित करने, घटनाओं को विस्तार देने और कहानी में गहराई लाने का अवसर मिलता है। राजनीति, अपराध, खेल, इतिहास, कॉर्पोरेट दुनिया, सामाजिक संघर्ष, रिश्तों की जटिलता और मनोवैज्ञानिक विषयों पर आधारित कहानियां इसलिए वेब सीरीज में ज्यादा प्रभावशाली दिखाई देती हैं।

भारत में भी दर्शकों की पसंद तेजी से बदली है। एक समय था जब मनोरंजन का अर्थ पारिवारिक ड्रामा और प्रेम कहानियां माना जाता था। अब दर्शक वास्तविक घटनाओं, खोजी कथाओं, बायोग्राफिकल ड्रामा और सामाजिक विषयों पर आधारित कंटेंट को भी उतनी ही रुचि से देखता है। यही कारण है कि वास्तविक घटनाओं पर आधारित वेब सीरीज को व्यापक लोकप्रियता मिली। दर्शक अब केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि अनुभव और जानकारी भी चाहता है। हालांकि, वेब सीरीज के सामने भी चुनौतियां कम नहीं हैं। शुरुआती दौर में जो नवीनता और साहस दिखाई

देता था, अब कई प्लेटफॉर्म उसी फॉर्मूले को बार-बार दोहराते नजर आते हैं। अपराध, हिंसा और सनसनी पर अत्यधिक निर्भरता के कारण कई सीरीज आलोचना का भी शिकार हुई हैं। इसके अलावा दर्शकों के सामने विकल्प इतने अधिक हो गए हैं कि किसी भी नई सीरीज के लिए उनका ध्यान आकर्षित करना कठिन होता जा रहा है। कंटेंट की बाढ़ के बीच गुणवत्ता बनाए रखना ओटीटी उद्योग की सबसे बड़ी चुनौती है।

दूसरी ओर, यह मान लेना भी गलत होगा कि सिनेमा समाप्ति की ओर बढ़ रहा है। पिछले कुछ वर्षों में कई फिल्मों ने यह साबित किया है कि बड़े पर्दे का आकर्षण अभी खत्म नहीं हुआ। भव्य दृश्य, शानदार तकनीक, बड़े पैमाने की एक्शन फिल्में और सामूहिक रूप से फिल्म देखने का अनुभव आज भी सिनेमाघरों की सबसे बड़ी ताकत है। दर्शक घर पर मोबाइल स्क्रीन पर वह अनुभव प्राप्त नहीं कर सकता जो किसी विशाल स्क्रीन और अत्याधुनिक ध्वनि प्रणाली वाले थिएटर में मिलता है। दिलचस्प बात यह है कि अब फिल्म उद्योग भी बदलती परिस्थितियों के अनुरूप खुद को ढाल रहा है। कई निर्माता फिल्मों की थिएटर रिलीज के साथ-साथ ओटीटी रणनीति भी पहले से तय करते हैं। कुछ फिल्में सीधे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर रिलीज होती हैं, जबकि कुछ थिएटर में प्रदर्शन के कुछ सप्ताह बाद ओटीटी पर पहुंच जाती हैं। यह मॉडल दर्शाता है कि अब सिनेमा और ओटीटी प्रतिस्पर्धी कम, सहयोगी ज्यादा बनते जा रहे हैं।

टेलीविजन की स्थिति सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण दिखाई देती है। युवा दर्शक तेजी से टीवी से दूर हुए हैं। पारंपरिक धारावाहिकों का दर्शक वर्ग सीमित होता जा रहा है। हालांकि, छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में टेलीविजन अब भी मजबूत मौजूदगी रखता है, लेकिन शहरी भारत में उसकी पकड़ पहले जैसी नहीं रही। आने वाले वर्षों में टीवी को अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए कंटेंट और प्रस्तुति दोनों स्तरों पर बड़े बदलाव करने होंगे। असल सवाल यह नहीं है कि वेब सीरीज सिनेमा और टीवी को खा जाएंगी या नहीं। असली सवाल यह है कि दर्शक अपना समय किसे देगा। आज की दुनिया में समय सबसे मूल्यवान संसाधन है। मनोरंजन उद्योग की पूरी लड़ाई दर्शक के उसी सीमित समय के लिए है। जो माध्यम उसे बेहतर अनुभव, बेहतर कहानी और अधिक सुविधा देगा, वही उसकी प्राथमिकता बनेगा। वर्तमान स्थिति को देखकर इतना जरूर कहा जा सकता है कि वेब सीरीज अब कोई अस्थायी फैशन नहीं हैं। उन्होंने मनोरंजन के उपभोग का तरीका बदल दिया है। उन्होंने दर्शक को यह अधिकार दिया है कि वह अपनी पसंद का कंटेंट अपने समय और अपनी सुविधा से देख सके। यही कारण है कि ओटीटी प्लेटफॉर्म लगातार बढ़ रहे हैं और उनके लिए बनने वाला कंटेंट भी पहले से कहीं अधिक विविध और महत्वाकांक्षी हो गया है।

फिर भी सिनेमा का भविष्य पूरी तरह अंधकारमय नहीं है। भारतीय दर्शक भावनात्मक रूप से फिल्मों से जुड़ा हुआ है। बड़े सितारों का आकर्षण, त्योहारों पर रिलीज होने वाली फिल्में और सिनेमाघरों का सामूहिक अनुभव अभी भी उसकी सांस्कृतिक स्मृति का हिस्सा हैं। इसलिए भविष्य शायद किसी एक माध्यम का नहीं होगा। सिनेमा, टेलीविजन और वेब सीरीज तीनों मौजूद रहेंगे, लेकिन उनकी भूमिका बदल जाएगी। मनोरंजन की दुनिया अब एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहां ताज किसी एक माध्यम के सिर पर नहीं है। लेकिन इतना तय है कि वेब सीरीज ने खेल के नियम बदल दिए हैं। उसने दर्शक को केंद्र में ला खड़ा किया है और अब वही तय करेगा कि आने वाले दशक में मनोरंजन का असली बादशाह कौन होगा।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

सिर्फ क्राइम थ्रिलर नहीं है बॉबी देओल की 'बंदर'

बॉलीवुड में दमदार वापसी कर चुके बॉबी देओल एक बार फिर चर्चा में हैं। उनकी नई फिल्म 'बंदर' को दर्शकों से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिल रही है। क्राइम थ्रिलर के रूप में प्रस्तुत यह फिल्म सिर्फ मनोरंजन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज, न्याय व्यवस्था और मीडिया की भूमिका पर भी गंभीर सवाल खड़े करती है। फिल्म में बॉबी देओल ने टीवी सुपरस्टार समीर मेहरा का किरदार निभाया है, जिस पर उसकी पूर्व प्रेमिका दुष्कर्म का आरोप लगाती है।

इसके बाद शुरू होता है आरोप, मीडिया ट्रायल और अदालत के बीच सच की तलाश का जटिल सफर। निर्देशक अनुराग कश्यप ने कहानी के जरिए मीटू आंदोलन, जेलों की स्थिति और न्यायिक प्रक्रियाओं की चुनौतियों को उकेरने का प्रयास किया है। दर्शकों का मानना है कि फिल्म का सबसे मजबूत पक्ष इसका सामाजिक संदेश है। कई समीक्षकों और दर्शकों ने इसे भेदभावपूर्ण कानूनों, पूर्वाग्रहों और सत्ता के प्रभाव पर तीखी टिप्पणी बताया है। सोशल मीडिया पर फिल्म को लेकर उत्साह इतना है कि कई दर्शकों ने इसे बॉबी देओल के करियर की सर्वश्रेष्ठ परफॉर्मेंस करार दिया है।

एक दर्शक ने समीक्षा में लिखा कि फिल्म कोर्टरूम ड्रामा, मीडिया ट्रायल और सच बनाम ताकत की लड़ाई को बेहद प्रभावशाली ढंग से पेश करती है। वहीं दूसरे दर्शक के अनुसार, 'बंदर' उन फिल्मों में शामिल है जो समाज के संवेदनशील मुद्दों पर बहस छेड़ने का साहस रखती हैं। 'एनिमल' के बाद बॉबी देओल की यह फिल्म उनकी दूसरी पारी को और मजबूत बनाती दिख रही है। वहीं अनुराग कश्यप एक बार फिर अपने पुराने अंदाज डार्क, रॉ और बेबाक कहानी कहने के साथ लौटे हैं।

परदे पर कई बार पेश हुए आग के मंजर

अशोक जोशी

हाल ही में नई दिल्ली के एक होटल में लगी आग ने न केवल इस क्षेत्र में तबाही का मंजर खड़ा किया, बल्कि कई लोगों को मौत के हवाले कर दिया। पिछले साल गोवा के एक क्लब में लगी आग ने यह मंजर दिखाया था। इंदौर में भी गत दिनों

कार की चार्जिंग करते समय लगी आग ने पूरे परिवार को ही खाक कर दिया था। आग ने समाज के साथ साथ सिनेमा को भी अपने कोप का शिकार बनाया। कुछ साल पहले लगी आग ने हॉलीवुड के कई दिग्गज सितारों के आशियानों को जलाकर खाक कर दिया था। ऐसे कई मौके आए हैं जब मौके बेमौके लगी आग ने सितारों को बर्बाद किया है।

हिंदी फिल्मों और फिल्मों से जुड़े लोगों को आग घटनाओं ने प्रभावित किया है। कुछ साल पहले ही राज कपूर के चेम्बूर स्थित आरके स्टूडियो में लगी आग ने पूरा स्टूडियो ही राख में बदल दिया था। यही कारण है कि कपूर खानदान ने अपने परिवार की इस अनमोल निशानी को गोदरेज के हाथों बेच दिया जो अब फिल्मों की शूटिंग का ठिकाना नहीं, बल्कि रईस लोगों के रहने का आशियाना बन कर रह जाएगा। 'मदर इंडिया' के सेट पर लगी जानलेवा आग में यदि सुनील दत्त नरगिस को नहीं बचाते तो यह सबसे बड़ा हादसा होता। लेकिन, इस आग से बचकर नरगिस ने विवाह के हवन कुंड की आग के सामने सुनील दत्त को अपना जीवन साथी बना लिया। लेकिन, यही आग फिल्म अभिनेता और निर्माता निर्देशक संजय खान के लिए उतनी मेहरबान नहीं रही। उनके महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट 'टीपू सुल्तान' के सेट पर लगी आग ने न सेट को राख में बदल दिया और कुछ क्रू मेंबर्स की जान भी ली। संजय खान को भी लगभग 70 प्रतिशत तक जला दिया, जिससे उनका बच निकलना किसी चमत्कार से कम नहीं था।

यह आग फिल्मी स्टूडियो और फिल्मकारों के लिए ही घातक साबित नहीं हुई, बल्कि कई बार सिनेमाघरों में लगी आग ने मनोरंजन के लिए आए दर्शकों को आग में झोंक दिया था। दिल्ली के उपहार सिनेमा का हादसा आज भी रोंगटे खड़े कर देता है। इंदौर में 'जूली' फिल्म के दौरान एलोरा टॉकीज में लगी आग ने न केवल फिल्म की प्रिंट को नष्ट कर दिया, बल्कि सिनेमाघर को भी कई महिनों तक दर्शकों से महरूम रखा। यहीं बंद पड़े रीगल सिनेमा में बार बार आग लगने का कारण कोई नहीं जान पाया है। बीआर चौपडा की फिल्म 'द बर्निंग ट्रेन' के निर्माण के दौरान भी यही आग कई गुल खिला चुकी है। फिल्म डिविजन, सेंसर बोर्ड और फेमस स्टूडियो

के गोदामों में लगी आग ने भी कई फिल्मों की निगेटिवों को हमेशा हमेशा के लिए नष्ट कर दिए। एक घटना तो यह भी है कि अपनी पत्नी गीता बाली की असमय मौत से शम्मी कपूर ने आपा खोकर उनकी फिल्म 'रानो' की निगेटिव को अपने हाथों से आग के हवाले कर दिया था।

ऐसा लगता कि कपूर खानदान और आग का चोली दामन का साथ है। राज कपूर ने अपने निर्देशन में बनी पहली फिल्म का नाम ही 'आग' रखा था। इसी के महिला संस्करण 'सत्यम शिवम सुंदरम' की नायिका को भी राज कपूर ने 'आग' से बदसूरत बनाया था। उनकी ज्यादातर फिल्मों के गीतों में कहीं न कहीं आग के बोल सुनने में आ ही जाते हैं। 'आग' के गीत 'जिंदा हूं इस तरह' में जलता हुआ दिया हूं मगर रोशनी नहीं' के सुर सुनाई

दिए तो अगली ही फिल्म 'बरसात' के शीर्षक गीत 'बरसात में हमसे मिले तुम' में एक जगह हताश होकर नायिका कहती है आग की लपटों में पुकारे ये मेरा गम मिल न सके हाय मिल न सके हम।

आवारा के प्रसिद्ध स्वप्न गीत में मन्ना डे की आवाज चीख चीखकर कहती है 'जिंदगी की आग

में जिंदा जल रहा हूं में, मुझको प्रीत चाहिए मुझको चाहिए बहार' तो दूसरे गीत में मुकेश कहते हैं 'यह दिल जो जला एक आग उठी।' आग से राज कपूर का नाता यही समाप्त नहीं हुआ था। 'जिस देश में गंगा बहती है' में ढेर सारे गायकों वाले गीत का आगाज ही आग से करते हुए प्राण से गाते हैं 'हे आग हमारे सीने में हम आग से खेलते जाते हैं।' संगम के त्रिकोणात्मक गीत में वह फरमाते हैं 'जिस महफिल में शमा हो, परवाना जाएगा दीवाना सैकड़ों में पहचाना जाएगा।' मेरा नाम जोकर में एक गीत है 'गोरे मुखड़े पर चमके बिजुरिया कहीं आग न लग जाए!' जोकर की आग में झुलसने के बाद राज कपूर ने अपनी आगामी फिल्मों में आग से परहेज किया और 'सत्यम शिवम सुंदरम' में आग के दृश्य और कथानक थे, लेकिन गीतों में फिर आग कहीं दिखाई नहीं दी।

राज कपूर अलावा दूसरे निर्माताओं ने अलग अलग रूप में आग को फिल्मों में शामिल किया। इनमें 'द बर्निंग ट्रेन' तो आग पर ही आधारित थी। इसके अलावा कम ही फिल्मों में आग का भयावह रूप दिखाई दिया। हुआ तो बस इतना कि कई फिल्में ऐसी बनी, जिनके शीर्षकों में आग की आंच दिखाई दी। इनमें राज कपूर के अलावा फिरोज खान की आग, आग ही आग, यह आग कब बुझेगी, आग का गोला, प्यार की आग, बिरहा की आग, आग और दाग, हवस की आग, कामाग्नि, अग्नि, अग्निपथ, शोले, राम गोपाल वर्मा के शोले, अंगार, अंगारे, शोला और शबनम, शमा परवाना, शमा, ज्वाला, ज्वाला डाकू, ज्योति बनी ज्वाला, ज्वालामुखी, माचिस, मीरा नायर की 'फायर : द आग' प्रमुख है। दिलीप कुमार की फिल्म 'आग का दरिया' बन नहीं पाई वर्ना इस फेहरिस्त में एक नाम और जुड़ जाता।

फिल्मी गीतों में भी आग या इससे जुड़े पर्यायों का जमकर उपयोग किया गया। आग दिल में लगी है मेरे पास तू न आ, प्यार की आग में तनबदन जल गया। लकड़ी जली कोयला बनी कोयला बनी आग, चिंगारी कोई भड़के, सावन के महिने में एक आग सी सीने में, हम भी तो आग में जलते रहे प्यार के शोलों पर चलते रहे, आग पानी में लगी, पानी में जले मेरा गोरा बदन, आग लगा के चले हो कहां, सावन जो अगन लगाए। कहीं आग लगे लग जाए, सावन में लग गई आग, आग से आग बुझा, दीये जलते हैं, जिया जले, राधा कैसे न जले, आग लगी तन में दिल को पड़ा थामना, शोला जो भडके, जलते हैं जिसके लिए, कही दीप जले कहीं दिल, ये शमा तो जली, हम प्यार में जलने वालों को, दुनिया वालों से दूर जलने वालों से दूर, तू मेरी मैं तेरा दुनिया जले तो जले, और ये देखो जला घर किसी का जैसे दर्जनों गीत शामिल हैं।

'खंडित-आस्था' के इस खतरनाक दौर में !

प्रकाश पुरोहित
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

जि मेरे शहर की काबिल पुलिस तो कर्नाटक हाइकोर्ट से भी आगे है कि जब तक हाथ-पैर काटने का कानून बनेगा, तब तक हाथ या टांग तोड़ तो सकते ही हैं, लेकिन यह शुभ कार्य पुलिस अपने कर-कमलों से नहीं करती है... आपके हाथ-पैर हैं तो आप ही खंडित करें ! हम तो तब तक पकड़ेंगे नहीं, जब तक खुद के पैरों पर खड़े नहीं हो जाते। उसे ऐसे-ऐसे रास्तों से दौड़ाया जाता है कि हाथ भले ही बच जाए, टांग तो टूटे बगैर नहीं रहेगी। इसके लिए 'विशेष प्रशिक्षण' दिया जा रहा है कि किसी सिपाही का नाखून भी नहीं टूटता और भाग रहे मुलजिम का, मुलजिम के साथ फोटो उतरवाने की परंपरा थी। अब उसमें सुधार हो गया है कि टूटी टांग या टूटा हाथ जरूरी है, क्योंकि यदि भागेगा ही नहीं तो उसे मुलजिम कैसे समझ लेंगे ! इनका क्या है, ये तो थाने आ कर बैठ जाएं, लेकिन हमने पकड़ा है, यह कैसे साबित होगा। बस, इसीलिए पुलिस रेग्युलेशन में बदलाव हुआ है कि मुलजिम है तो उसे भागना ही होगा और भागेगा तो हाथ-पैर टूटेंगे ही। कोर्ट में अपराधी साबित करना आसान हो जाता हैष अपराध किया या नहीं, यह तो बाद की बात, टांग और हाथ टूटे हैं यानी आदतन मुलजिम तो है ही। सिपाही ने नए-नए सबक एक साथ बक दिए।

... लेकिन मैं यह काम नहीं कर सकता, बगैर हड्डी टूटे, प्लास्टर तो गलत है ना ! डॉक्टर ने मजबूरी बताई। यदि आप चाहते हैं कि हड्डी टूटे तो यह कौन बड़ी बात है, अभी तोड़े देते हैं! कहते हुए सिपाही उठ खड़ा हुआ और डंडा हाथ में उठा लिया।

टीआई साब को पूरे दस हजार दिए हैं, आप ऐसा नहीं कर सकते ! मुलजिम (जिसे आजकल आरोपी कहने का रिवाज हो गया है, जबकि आरोपी का मतलब

पिछले हफ्ते मेरी टांग टूट गई। कायदे से सहानुभूति होनी चाहिए, लेकिन आसपास वाले मुझे शक की निगाह से देख रहे हैं। साफ पूछ नहीं सकते कि क्या पुलिस के चक्कर में टांग तुड़वा बैठे हो ! आजकल कोई यह मानने को तैयार ही नहीं है कि घर में चलते- फिरते भी टांग टूट सकती है। बात भी सही है, आजकल जो भी मुलजिम पकड़ा जाता है, टूटी टांग के साथ ही। यदि टांग या हाथ नहीं टूटा है तो उसे शंका का लाभ मिल जाता है।

कुछ ना कुछ टूटना तो तय हो जाता है। पुलिस रिकार्ड में उसे मुलजिम माना ही नहीं जा रहा है, जिसके हाथ-पैर खंडित ना हों।

मेरे शहर के हड्डी डॉक्टर को फुर्सत नहीं है कि एक को प्लास्टर लगाते हैं कि दूसरा चला आता है। पुलिस को धन्यवाद दे रहें हैं डॉक्टर कि इतने केस तो रामदेव के योग शिविर के बाद भी हड्डी टूटने के नहीं आए। ओवर टाइम करना पड़ रहा है और समय का भी कुछ तय नहीं है कि कब मरीज आ जाए।

इसकी टांग तो टूटी नहीं है? डाक्टर ने एक्स-रे देखते हुए कहा।

हमें भी पता है, लेकिन आप तो प्लास्टर लगा दीजिये ! देश-भक्ति, जन-सेवा का बिल्ला लगाए सिपाही ने कहा।

फिजूल में प्लास्टर किसलिए? डाक्टर थोड़ा नियम कायदे वाला निकला।

पहले के जमाने में मुंह पर काला कपड़ा डाल कर, तो हिंदी शब्दकोश में आरोप लगाने वाला होता है) ने घबरा कर उठते हुए गुप्त जानकारी दी। ठीक है, ठीक है, नहीं तोड़ेंगे, अब ये तो इनकार कर रहे हैं, कहीं और चलें क्या? मुलजिम से सिपाही ने सलाह-मशविरा किया और यह तय पाया गया कि सरकारी वाला तो ज्यादा मुंह फाड़ेगा, किसी प्रायवेट डॉक्टर के यहां ही चलते हैं।

मैंने तो पहले ही कहा था... ! मुलजिम ने उलाहना दिया। हमारा डॉक्टर तय है, बगैर देखे सब कर देगा, जैसा आप कहेंगे! मुलजिम आगे-आगे चल दिया ! याद है, मुझे आज भी, कुछ साल पहले मेरी टांग टूटी थी तो कितने लोग देखने, हालचाल पूछने आ गए थे, अबकी बार लोग डरी-सहमी नजरों से मुझे देख रहे हैं, जबकि मैं तो पासपोर्ट के लिए चरित्र प्रमाण-पत्र लेने थाने गया था। अब टूटी टांग घर रख कर तो जा नहीं सकता था ना, देख लिया कुछ लोगों ने, चला दिया वाट्सएप पर मैसेज !

मुझे चाहिये दो वक़्त की रोटी, बस्स

...और क्या कह रही है जिंदगी
विश्व बालश्रम विरोधी दिवस

ममता तिवारी
लेखिका साहित्यकार हैं।

आ बालश्रम क्या है? जब छोटे बच्चों से उनकी उम्र के विपरीत काम कराया जाता है जिससे उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, बचपन प्रभावित हो उसे बालश्रम कहा जाता है।

अब वो कैसे काम हैं जो हमें बच्चों से नहीं करवाने चाहि?

फैक्ट्रियों में, ढाबों और होटलों में, घरों में, दुकानों पर, खदानों में या सड़क पर सामान बेचने जैसे रूपों में हो सकता है।

बालश्रम क्यों होता है? कई परिवार आर्थिक मजबूरी के कारण बच्चों को काम से लगा देते हैं कई बार घर चलाने वाले पिता या माँ बीमार या उनकी मृत्यु के कारण बच्चे श्रम करने को मजबूर हो जाते हैं। कई बार शिक्षा की कमी व नियमों के प्रति जागरूकता का अभाव भी इसका कारण होता है। कई बार बच्चों से काम करवाना सस्ता पड़ता है।

बालश्रम के क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं? बच्चों का बचपन छिन जाता है, शिक्षा अधूरी रह जाती है मानसिक, शारीरिक विकास रूक जाता है। शोषण और हिंसा का खतरा बढ़ जाता है आसानी से पैसा कमाने की हौड़ में बचपन अपराध की ओर बढ़ जाता है। विश्व के नक्शे में बालश्रम में हम अग्रणीय नज़र आते हैं। देखें इस बारे में हमारा कानून क्या कहता है इसके लिये हमने वरिष्ठ न्यायाधीश दिनेश नायक से चर्चा की।

दिनेश नायक- बाल और किशोर श्रम (प्रतिषेध और विनियमन) संशोधित अधिनियम, 2016 के अनुसार चौदह वर्ष से कम उम्र के बच्चों को मजदूरी करवाना या खतरनाक उद्योगों में काम पर नहीं लगाया जा सकता।

ममता- क्या इन बच्चों को कुछ कानूनी अधिकार दिये गये हैं?

दिनेश नायक- निशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार देता है।

ममता- परंतु इन भारी भरकम शब्दावली और नियमों के बारे में सड़क पर घूमने वाले, झुग्गी में रहने वाले, मजदूरी करने वाले बच्चों और उनके माँ बाप तक ये नियम कैसे पहुँच पाते हैं?

दिनेश जी: इसमें समाज बहुत बड़ा रोल निभा सकता है। आप छोटी उम्र के बच्चों से काम ना करायें। बाल मजदूरी देखें तो शिकायत करें। ऐसे बच्चों को नियम कानून सिखायें उनके माँ बाप को जागरूक बनायें। उन्हें स्कूल भेजने में मदद करें।

ममता- अगर किसी घर में पिता ना हो माँ बीमार हो तो छोटे भाई बहनों का पेट पालने के लिये घर का बड़ा लड़का चाहे वो 12-13 साल का हो उसे कमाना पड़ता है

दिनेश नायक- बालश्रम अधिनियम (संशोधन) 2016 के अनुसार उन्हें अपने पारिवारिक व्यवसाय में अपने परिवार की सहायता करने या स्कूल समय के उपरांत कार्य करने, या उन्हें हल्का फुलका काम करने की छूट है।

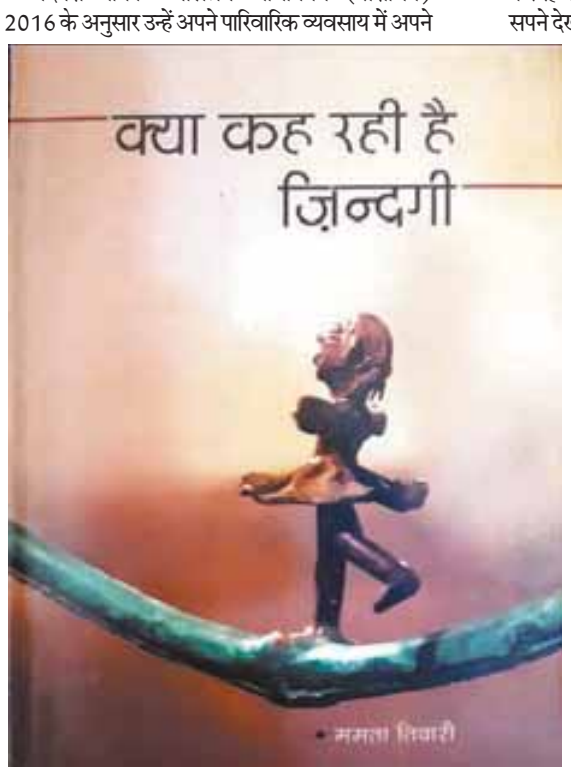

ममता- आप ने बताया कि बच्चों को शिक्षा, भोजन का अधिकार है, पर मुझे ये बहुत फलीभूत होते दिखता नहीं आज भी बच्चे डोंगी से, अस्थाई पुल से, नदी नाले पार करके स्कूल जाने को मजबूर हैं?

दिनेश नायक- इस योजना पर काम जोरों से चल रहा है अगर कोई नियमों का उल्लंघन कर बालश्रम करवाता है तो उसे 6 माह की सजा, जो दो वर्ष तक बढ़ाई जा सकती है। सजा के स्थान पर अर्थदण्ड 20 से 50,000 तक हो सकता है। बहुत से सामाजिक कार्यकर्ता, यूनीसेफ किसी भी परिस्थिति में बालश्रम के खिलाफ़ हैं। आंगनबाड़ियाँ या मध्यान्ह भोजन योजना बनाई गई हैं ताकि प्राथमिक शिक्षा हो सके। दूरदराज़ गांवों के बच्चों को देश की मुख्य धारा से जोड़ा जाना आवश्यक है कानून के साथ समाज को भी आगे आना होगा।

खुद के लिये बनाये नियमों से बेखबर
कर रहे मजदूरी पे गुज़र
सपने देखने के लिये रात तो है
गांठ में खाने को पैसा नहीं
कॉपी में कुछ अक्षर गढ़ सकें
नसीब कुछ ऐसा नहीं
बाप गुज़र गया, माँ रोग ग्रस्त है
भाई बहन छोटे हैं, वक्त बहुत सख्त है
उम्र माना चौदह साल, पापी पेट का सवाल है
कभी पटाखा फैक्ट्री में जाता है झुलस
कभी होटल में बर्तन धोते थक जाता हूँ
साब के बच्चों के जूते पॉलिश करता हूँ
किताबें देख आहें भरता हूँ
कभी कोई मुझे देख जोश में आता है
मेरे लिये बालश्रम कानून बताता है
नारे बाजी कर काम से हटवाता है
और सड़क पर भूखा, तन्हा छोड़ जाता है
पेट से घुटने सटा कैसे सोया जाता है
वो शायद नहीं जानते
बालश्रम अपराध है बस इतना जानते
हम बाल मजदूर हैं, सपनों, शिक्षा
को याद नहीं रखना चाहते
सोचता, थोड़ा और कमा लाऊँ,
घर परिवार के वास्ते
उन्हें मनाने दो बालश्रम विरोध दिवस
मुझे चाहिये दो वक़्त की रोटी, बस्स।

हर परिस्थिति को संवेदनशीलता से समझना ज़रूरी है। गरीबी से जूझ रहे बच्चे को केवल 'कानून तोड़ने वाला' कह देना कोई समाधान नहीं है। असली जिम्मेदारी समाज और व्यवस्था की है कि बच्चे को ऐसा सहारा मिले जिससे वह काम की मजबूरी से बाहर आ सके और सम्मानपूर्वक जीवन जी सके और हम मुस्कुरा के पूछ सकें उससे और क्या कह रही है ज़िंदगी?

गर्मियों की छुट्टियां हों और यह न आए, ऐसा कैसे हो सकता है?

फोटो: गिरीश शर्मा

दुःख ने मारे ... कलाकार ऐसे ... !

चौबीस बरस पहले मार्जाने सतरापी की कॉमिक-बुक मास्टरपीस, 'पर्सेपोलिस' ने इरान की छवि बदल दी थी। उनकी ग्राफिक किताब चुलबुली, बेबाक लड़की की नजर से बताई थी, जो 1979 की इस्लामिक क्रांति ज़ के दौरान बड़ी हो रही थी। यह लड़की ब्लैक मार्केट से किम वाइल्ड कैसेट खरीदती थी और गिरफ्तारी, टॉर्चर और इरान-इराक युद्ध की तबाही को समझने की कोशिश करती थी। फिर चौदह बरस की उम्र में उसे यूरोप भेज दिया, क्योंकि माता- पिता को लगा कि वहां महफूज रहेगी।

दृष्टिकोण
❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

दो दिन पहले खबर आई कि मार्जाने सतरापी नहीं रहीं। परिवार ने बताया कि छप्पन बरस में 'दुःख' से मर गईं। कितना दुःख है, यह उनसे पूछिए, जो मार्जाने सतरापी की किताब, फिल्मों, कार्टून और उनकी बातों के सहारे इरान को उस तरह देख पाए, जो मार्जाने के पहले नहीं थीं।

चौबीस बरस पहले मार्जाने सतरापी की कॉमिक-बुक मास्टरपीस, 'पर्सेपोलिस' ने इरान की छवि बदल दी थी। उनकी ग्राफिक किताब चुलबुली, बेबाक लड़की की नजर से बताई थी, जो 1979 की इस्लामिक क्रांति ज़ के दौरान बड़ी हो रही थी। यह लड़की ब्लैक मार्केट से किम वाइल्ड कैसेट खरीदती थी और गिरफ्तारी, टॉर्चर और इरान-इराक युद्ध की तबाही को समझने की कोशिश करती थी। फिर चौदह बरस की उम्र में उसे यूरोप भेज दिया, क्योंकि माता-पिता को लगा कि वहां महफूज रहेगी।

'पर्सेपोलिस' की लाखों प्रतियां बिक चुकी हैं, जिससे सतरापी सबसे ज्यादा बिकने वाली इरानी लेखक हैं। इतना ही नहीं, एनिमेटेड फीचर ऑस्कर के लिए नॉमिनेट होने वाली पहली हैं। दुनिया भर के समाचार- पत्र में उनके कार्टून की डिमांड थी, लेकिन 2004 में बंद कर दिया। उन्होंने मैरी क्यूरी की पायनियरिंग साइंटिफिक रिसर्च के बारे में मशहूर 2020 रेडियो एक्टिव समेत पांच फीचर फिल्ब बनाईं। मार्जाने सतरापी का जन्म 1969 में रश्त में हुआ था और तेहरान में धर्मनिरपेक्ष, राजनीतिक परिवार में पली- बढ़ीं। उनका बचपन 1979 की क्रांति और उसके बाद उस दौर में हुए महिलाओं पर बंदिश, नाराज को जेल-फांसी और इरान-इराक युद्ध में बीता। कम उम्र में ही माता- पिता ने पढ़ने वियना भेज दिया। इरान लौट कर शादी की, चली नहीं और फ्रांस चली गईं, जहां कला पर काम किया।

सतरापी ने इरानी इतिहास की उथल- पुथल को डॉक्यूमेंट किया। पुलिस कस्टडी में बाइस बरस की महिला महसा अमिनी की मौत हो गई थी। महसा पर कानून तोड़ने का आरोप था। महिलाओं को हिजाब जरूरी था, लेकिन विरोध में महिलाओं ने घूंघट फाड़ दिए।

इरान सरकार के बारे में कहा- 'हमें अधिकार नहीं। नाचने-गाने का अधिकार नहीं है, ये नहीं कर सकते, वो नहीं कर सकते। लिखती थीं- अपने देश से दूर रहना, लेकिन लगातार उसके बारे में सोचना। इरान को घर कहती हूं, क्योंकि चाहे फ्रांस में रहूं, मेरे लिए घर शब्द का मतलब है- इरान। सतरापी ने 2009 में द टाइम्स के लिए लिखा था- पेरिस और उसकी सुंदरता से प्यार करती हूं। तेहरान सारी बदसूरती के साथ हमेशा दुनिया भर के शहरों की दुल्हन रहेगा।

पिछले साल पति मौत के बाद सतरापी ने फाउंडेशन शुरू किया, उन विदेशी बच्चों की मदद के लिए, जो फिल्म की पढ़ाई करने पेरिस आना चाहते हैं। पति के जाने के बाद सतरापी ने सिर्फ तस्वीरों की सीरीज रिलीज की थी, जिस पर लिखा था- क्योंकि मैंने अपनी जिंदगी का प्यार खो दिया।

उन्होंने कहा था- मैंने कितनी बार सुना है, तुम असली औरत नहीं हो। जब तक तुम मां नहीं हो, खैर, मैं हूं। मैं औरत हूं, पूरी तरह से औरत, बिना कभी बच्चे को जन्म दिए। मुझे ऐसे अनुभव हैं, दूसरे कभी नहीं जान पाएंगे। किसी आदमी या बच्चे से पूरा होने की जरूरत नहीं है। अपने आप में ही काफी हूं।

मार्जाने सतरापी ने बहुत प्यार किया। परिवार वाले कहते हैं, उनकी मौत दिल टूटने से हुई। कई लगता है कि उन्हें देख रही हैं, उन्हें भी टूटे दिल के साथ छोड़ गईं।